मूर्ख-मंडली

गंगा-पुस्तकमाला का नवाँ पुष्प

मूर्ख-मंडली

[श्रीद्विजेंद्रलाल राय एम्० ए० के सुप्रसिद्ध प्रहसन
'त्र्यहस्पर्श' के आधार पर रचित]

रचयिता

पं० रूपनारायण पांडेय

संकोच, लोक-लज्जा उड़ जायगी हृदय से ;
भट्ठी में जाने की है यह राह—यह तरीक़ा ।

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

अष्टमावृत्ति

सजिल्द १।।)] सं० २००० वि० [सादी १)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

—:०:—

प्रथमावृत्ति सितंबर, १९३८
द्वितीयावृत्ति जनवरी, १९२०
तृतीयावृत्ति जुलाई, १९२१
चतुर्थावृत्ति अगस्त, १९२२
पंचमावृत्ति मई, १९२७
षष्ठावृत्ति एप्रिल, १९३७
सप्तमावृत्ति नवंबर, १९३८
अष्टमावृत्ति दिसंबर, १९४२

—:०:—

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ


प्रेमोपहार

वक्तव्य

बँगला के सर्वश्रेष्ठ नाटककार श्रीयुत द्विजेंद्रलाल राय एम्० ए० के नाम से इस समय हिंदी-जगत् भली भाँति परिचित है। उन्हीं के सुप्रसिद्ध प्रहसन 'त्र्यहस्पर्श' के आधार पर, हिंदी-रंग-मंच पर खेले जाने के योग्य बनाने के अभिप्राय से कुछ फेर-फार करके, इस पुस्तक की रचना की गई है। हिंदी में ऐसी पुस्तकों का अभाव देखकर ही हम यह पुस्तक 'गंगा-पुस्तकमाला' के पाठकों की भेंट करते हैं, और आशा करते हैं, यह उन्हें अत्यंत मनोरंजक प्रतीत होगी।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ, १०।६।१९१८

संपादक

विज्ञप्ति

इस नाटक को हमें ८ बार छापना पड़ा, इसके लिये हम हिंदी-प्रेमियों के कृतज्ञ हैं। अब भी इसकी माँग अत्यंत अधिक है।

कवि-कुटीर
लखनऊ, १।१।५५

दुलारेलाल

नाटक के पात्र

(पुरुष)

विजयसिंह	... राजा
गोपालसिंह	... राजा का पुत्र (मँझला)
किशोरसिंह	... राजा का पोता (बड़े लड़के का लड़का)
भगवतीप्रसाद	... स्वभावसिद्ध डॉक्टर
श्यामलाल	... भगवतीप्रसाद का बहनोई
मोहनलाल, भगवानदास, गंगाधर	... श्यामलाल के दोस्त
कुंजबिहारी, बनवारी, मथुरा, राधेलाल इत्यादि	... राजा के मुसाहब

(स्त्रियाँ)

चंपा (रानी)	... विजयसिंह की स्त्री
चमेली	... रानी की दूर के नाते की बहन
मोती	... एक स्त्री
जानकी, सुंदर, श्यामा, सलोनी, मोहिनी	... रानी की सखियाँ

पड़ोसी लोग, दरबान, बालक, वेश्याएँ इत्यादि

मूर्ख-मंडली

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—भगवतीप्रसाद का बैठकख़ाना

(भगवतीप्रसाद, श्यामलाल, भगवानदास, मोहनलाल और गंगाधर बैठे हैं)

भगवती०—राजा विजयसिंह कै पीढ़ी का राजा है जी ?

श्यामलाल—कै पीढ़ी का ? अरे, उसका बाप एक अँगरेज़ी-कंपनी के दफ़्तर का क्लर्क था। जिस तरह बना, भले-बुरे ढंग का ख़याल न करके, वह बहुत-से रुपए पैदा करके जमा कर गया। उस रक़म का बहुत-सा हिस्सा हाकिमों की डाली और दावत में ख़र्च करके विजयसिंह रायबहादुर हो गया। उसके बाद एक दिन मालूम हुआ, वह राजा बन बैठा है।

भगवान०—अरे, उस साले की बात क्यों करते हो जी ?

भगवती०—क्यों ?

भगवान०—अरे, उसके पास कोई भला आदमी जाता है, तो वह साला अपनी जगह से उठता भी नहीं।

भगवती०—तो क्या करता है ?

भगवान०—करेगा और क्या ? ज़रा गर्दन हिलाकर, आठ-दस दांत बाहर निकालकर खीसें निपोर देता है ।

मोहन०—खीसें क्या निपोरेगा और दाँत ही क्या निकालेगा ! उसके तो सामने के चार दाँत दिन-रात बाहर ही निकले रहते हैं ।

भगवान०—नहीं जी नहीं । उनके सिवा और भी चार दाँत बाहर निकालता है ।

भगवती०—एक पीढ़ी में और कितना होगा ? बुनियादी चाल चाहो, तो दादा—(छाती पर हाथ रखकर) ऐसा बुनियादी रईस खानदान तलाश करो ।

गंगाधर—हालाँकि घर में चूहे डंड पेलते हैं !

भगवती०—समझे श्यामलाल ! इन नसों में रानी प्रतापकुँअरि का खून है ।

श्यामलाल—यह तो वही हुआ, जैसे भड़भूँजों का अपने को राजा भोज का वंशधर बताना । अजी, रानी प्रतापकुँअरि के साथ तुम्हारा क्या नाता है ?

भगवती०—है जी, है ! क्या नाता है, सो इस समय ठीक याद नहीं पड़ता । मेरी मा की फुफेरी बहन के एक जेठ के ससुर के साथ शायद रानी प्रतापकुँअरि के मौसिया के साले की सास का कुछ नाता था ।

भगवान०—तब तो नाता बहुत ही निकट का है !

भगवती०—इसके सिवा मेरे—परबाबा या परनाना—ठीक याद नहीं पड़ता—नवाब आसफ़ुद्दौला से कोई एक खिताब पाते-पाते रह गए।

श्याम०—कहते क्या हो जी ! यहाँ तक ?

भगवती०—क्या कहूँ भाई, अगर यमघंट-योग में मेरा जन्म न होता !

गंगाधर—यमघंट ने ही सब बंटाधार कर दिया !

भगवती०—मेरे जीवन का इतिहास बराबर इसी तरह का है। एक बड़ा आदमी होते-होते रह गया—नहीं हो सका।

श्याम०—कैसे ?

भगवती०—पहले मेरा चेहरा ही देखो। अगर दोनो आँखें ज़रा बड़ी होतीं, नाक ज़रा लंबी होती, माथा ज़रा चौड़ा होता, डील ज़रा ऊँचा होता और रंग ज़रा और साफ़ होता—तो—

भगवान०—तो फिर साक्षात् कामदेव का अवतार होते; और क्या !

सोहन०—अफ़सोस !

श्याम०—मगर अब भी कामदेव नहीं, तो भस्मासुर से कम नहीं हो।

भगवती०—क्या कहूँ, इसी यमघंट-योग ने सब चापट कर

दिया !—अच्छा, इसके बाद विद्या देखो। लड़कपन में अगर ज़रा मन लगाकर पढ़ता—

मोहन०—तो बस एक विद्यादिग्गज हो जाते !

भगवती०—और वंश—

गंगाधर—रहने दो भाई, जो हो गया, वही काफ़ी है। अब वंश की बात क्यों छेड़ते हो ?

(गोपालसिंह का प्रवेश)

श्याम०—क्यों जी कुमार बहादुर ! बेवक्त कैसे ?

गोपाल०—मैं तुम्हारे घर पर गया था। वहाँ सुना, तुम सबने डॉक्टर साहब के यहाँ आकर अड्डा जमाया है, इसी से यहाँ आ गया।

श्याम०—सो बहुत अच्छा किया। मेरे यहाँ इस समय बैठने की जगह की ज़रा कमी हो गई है। कुछ प्लेग के चूहे मर गए हैं। डॉक्टर साहब का बैठकख़ाना ख़ूब खुलासा है—हवा-दार है। अब हम लोगों ने यहीं बैठने का अड्डा ठीक कर लिया है। आओ, तुमसे और डॉक्टर साहब से जान-पहचान करा दूँ। (भगवती को दिखाकर) यही डॉक्टर साहब हैं। इनका नाम है भगवतीसहाय भोपती।

गोपाल०—भोपती क्या ?

श्याम०—धत्, तुम तो बात पूछते हो और बात की जड़ पूछते हो ! भोपती उपाधि है।

मोहन०—और यह उपाधि इन्होंने ही इनके पीछे लगाई है।

श्याम०—अजी, मेरी सुनो। हाल ही में इन्होंने होमियोपैथी की प्रैक्टिस शुरू की है।

मोहन०—और, यह भी तो कहो कि पहले यह डॉक्टर पुत्तलाल के यहाँ छ रुपए महीने के नौकर थे। बाज़ार से सौदा ख़रीद लाते और हाज़मे की गोलियों का मसाला कूटा करते थे। कुछ दिन बाद एक २४ शीशीवाला होमियोपैथी दवाइयों का बक्स ख़रीदकर और डॉक्टर भादुड़ी के चिकित्सा-विज्ञान का हिंदी-अनुवाद पढ़कर एकाएक होमियोपैथिक इलाज करने में उस्ताद डॉक्टर बन बैठे।

भगवान०—अजी, निंदा क्यों करते हो। तुम्हारा न-जाने कैसा स्वभाव है! (गोपालसिंह से) नहीं कुँअरजी, यह सचमुच बड़े भारी डॉक्टर हैं। इन्होंने डॉक्टर बनने के लिये जी-तोड़ मेहनत की है।

गंगा०—अपना नाता क्यों छिपाए डालते हो श्यामलाल?

श्याम०—हाँ, और यह मेरे वही हैं, जो कहकर प्रायः हिंदी में गाली देते हैं। और भगवती, समझ गए, यह हमारे राजा बहादुर विजयसिंह के साहबज़ादे गोपालसिंह हैं—बहुत ही भले आदमी हैं।

गोपाल०—डॉक्टर साहब, आपसे मिलकर मैं बहुत ख़ुश हुआ।

भगवती०—(नम्रता के साथ) मैं भी वैसा ही ख़ुश हुआ!

गोपाल०—आप जब श्यामलाल के साले हैं, तब मेरे भी वही हैं।

भगवती०—बड़े आनंद की बात है। आप लोगों का साला होना मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है।

मोहन०—अच्छा, जान-पहचान तो हो गई; अब बताओ, क्या खबर है?

गोपाल०—एक खास जरूरत से आया हूँ।

गंगाधर—क्या किसी के ऊपर नजर पड़ी है?

गोपाल०—मामला कुछ इसी के लगभग है। मैं ब्याह करनेवाला हूँ।

भगवान०—(उछलकर) तुम्हारा—ब्याह!

गोपाल०—क्यों, क्या मेरा ब्याह न होना चाहिए? कहिए तो डॉक्टर साहब—

भगवती०—(सम्मति-सूचक सिर हिलाकर) जरूर होना चाहिए। Shakespeare के Origin of Condensed milk ग्रंथ में इस विषय पर एक बहुत ही सुंदर Lecture है।

मोहन०—ब्याह? ऐसा काम न करना—न करना।

गोपाल०—क्यों?

श्याम०—अभी अच्छे-खासे हो भैया, अच्छी तरह घूमते-फिरते हो, नाच-कूदकर—

गंगा०—महीन काली पाढ़ का ढाके का धोती-जोड़ा पहनकर—

मोहन०—बनारसी कामदार दुपट्टा डालकर—

भगवान०—वार्निश का पंप-जूता पहनकर—

श्याम०—छड़ी घुमाते—

मोहन०—मूछों पर ताव देते—

भगवान०—दाग़ की ग़जलें गाते—

गंगा०—धीरे-धीरे मुस्किराते फिरते हो।

श्याम०—फिर ब्याह का क्या काम है?

गंगा०—ऐसा कोरा संठपना तो बहुत कम देखा जाता है!

भगवान०—यह रोग तो पहले तुम्हारे न था।

गोपाल०—रोग काहे का?

भगवान०—रोग? बड़ा भारी रोग है। भला, बताओ तो भगवती बाबू, यह एक रोग नहीं है?

भगवती०—हाँ—सो—यह एक रोग तो है ही, Egyptian Pharmacopea में इसका नाम Potentia Rogofobia लिखा है। बड़ी विचित्र बीमारी है। ब्याह होते ही अच्छी हो जाती है। होमियोपैथी में इसकी एक बड़ी अच्छी दवा है। बस रामबाण है।

श्याम०—हाँ जी भगवती, तुम Treatment तो करो।

भगवती०—अभी लो। क्यों साहब, रात को नींद पड़ती है?

गोपाल०—पड़ती नहीं तो क्या?

भगवती०—समय पर स्नान न करने से क्या आपके हाथ-पैर झन-झन करने लगते हैं?

गोपाल०—हाँ, कुछ-कुछ।

भगवती०—और, शाम से पहले Whisky पिए बिना सिर भायँ-भायँ करने लगता है ?

गोपाल०—ज़रूर ।

भगवती०—और दोपहर के समय—यही दस-ग्यारह बजे के वक़्त—भोजन में कुछ देर होने से मिज़ाज री-री करने लगता है ?

गोपाल०—सो तो ख़ूब ज़ोर से ।

भगवती०—तो फिर चिंता नहीं, रोग ठीक हो गया ।

गोपाल०—कैसे ?

भगवती०—बैठिए, दवा देता हूँ । (दवा तैयार करता है)

गोपाल०—क्यों दिक़ करते हो ?

भगवान०—दिक़ नहीं जी, इनकी दवा पियो; आराम हो जायगा—ज़रूर चंगे हो जाओगे ।

श्याम०—अजी, ओ कुमार बहादुर ! तुम लोगों को एक Family Physician की ज़रूरत है ?

गोपाल०—हाँ, पिताजी कहते तो थे ।

श्याम०—तो फिर इन्हीं (भगवती) को न रख लो । यह बहुत अच्छे डॉक्टर हैं ।

मोहन०—इनका घराना भी बड़ा बुनियादी है !

गंगा०—घराने का क्या कहना है !

भगवती०—(दवा से भरी शीशी लाकर) यह लीजिए; लेबिल-टेबिल किया हुआ सब ठीक है । आधी रात को सोते से उठ-

कर एक दफा पीजिएगा। सवेरे भी अंगुल-सेंध नखने के पहले ही एक बार सेवन कीजिएगा।

गोपाल०—लेकिन भई, ब्याह का तो सब ठीक हो गया है।

भगवान०—ठीक कैसे हो गया है?

गोपाल०—ब्याह का सब लगभग ठीक ही है। सिर्फ अभी कोई कन्या नहीं मिली।

श्याम०—तब तो देखता हूँ, एकदम सब ठीक है। नहीं जी नहीं, अब रोकने की जरूरत नहीं। जब यहाँ तक ठीक हो गया है—

गंगा०—कन्या क्या मिलेगी! तुम्हारे गुन सब जानते जो हैं!

भगवान०—तुम्हीं बताओ तुम्हें कौन अपनी बेटी देगा?

भगवती०—आपको लड़की नहीं मिलती? मैं लड़की देता हूँ। आप कौन जाति हैं।

गंगा०—जाति पूछकर क्या करोगे? बस, समझ लो हिंदू हैं।

भगवती०—खैर, आप एक खूबसूरत लड़की चाहते होंगे?

श्याम०—नहीं तो क्या वह एक काली-खुथरी, बेढंगी दुलहिन पसंद करेंगे?

भगवती०—और जरूर एक छोटी-सी दुलहिन चाहते हैं?

गंगाधर—नहीं तो क्या तुम समझते हो कि वह किसी नानी-दादी के साथ ब्याह करेंगे?

भगवती०—बस, ठीक मिलता जा रहा है। मैं ठीक इसी तरह की कन्या जानता हूँ। लड़की साक्षात् विद्याधरी है—

मोहन०—नाचना जानती है?

गोपाल०—यह क्या आप सच कह रहे हैं?

भगवती०—सच कह रहा हूँ। क्यों साहब, क्या मैं देखने में झूठा आदमी जान पड़ता हूँ? जानते हैं आप, इन नसों में रानी प्रतापकुँअरि का खून है!

गोपाल०—लड़की को अगर देखना चाहें?

भगवती०—अभी!—नहीं साहब, दो दिन सबर करना होगा। दो दिन बाद ही प्रसव होगा।

गोपाल०—प्रसव होगा? तो क्या लड़की के गर्भ है?

भगवती०—आप कहते क्या हैं साहब? ऐसी लड़की के साथ आपका ब्याह कराऊँगा? आपने क्या मुझे ऐसा आदमी समझ रक्खा है? मेरे कहने का मतलब यह है कि लड़की अभी पैदा नहीं हुई है। यही दो-एक दिन में पैदा होगी।

गोपाल०—(श्यामलाल से) इस तरह के रत्न और तुम्हारे यहाँ कितने हैं?

श्याम०—कितने चाहते हो?

गोपाल०—इसी तरह की कोई एक लड़की न ठीक कर दो।

श्याम०—इसी तरह की दाढ़ी-मूछवाली?

भगवती०—(एकाएक) हो गया, हो गया ! और एक लड़की है। लेकिन हाँ, उसकी उमर कुछ ज्यादा है—

गोपाल०—कितनी उमर है ?

भगवती०—बहुत अधिक नहीं। यही पैंतालीस वर्ष के लगभग होगी।

श्याम०—रहने दो ! जरूरत नहीं है ! अब उठो।

मोहन०—कितना दिन चढ़ा है ? भगवती की घड़ी में तो तीन बजे हैं।

भगवती०—तीन बजे हैं ? तो फिर ठीक है। अब साढ़े दस का समय है।

भगवान०—तब तो भगवती की घड़ी को बहुत ही ठीक कहना चाहिए !

भगवती०—बेशक ! यह बहुत अच्छी घड़ी है। सिर्फ ऐब यही है कि चलती ठीक नहीं। जब छोटी सुई ६ के ऊपर रहती है, तब टन-टन करके १२ बजते हैं। और मैं समझता हूँ कि अब २ बजे है।

मोहन०—अब चलोगे ?

श्याम०—चलो।

भगवती०—(गोपालसिंह से) साहब, आप कुछ चिंता न कीजिएगा। मैं तीन-चार दिन के अंदर ही एक लड़की लाकर जुटा दूँगा, तब और काम करूँगा। तब तक मैं खाना-सोना सब छोड़ दूँगा।

श्याम०—पहले अपने लिये तो कोई लड़की खोजो !

गोपाल०—(भगवती से) क्या आपका अभी तक ब्याह नहीं हुआ ?

भगवती०—अरे भई, वह दुःख की बात क्यों चलाते हो !

भगवान०—क्यों ?

भगवती०—वही यमघंट-योग !

गोपाल०—कैसे ?

श्याम०—इन्होंने अभी एक ज्योतिषी को हाथ दिखाया था, उसने कहा कि इनके जीवन में ऐसा कुछ सुबीता न होगा, क्योंकि यह यमघंट-योग में पैदा हुए हैं।

गोपाल०—(भगवती से) क्यों जी, सच ?

भगवती०—(सिर ठोंककर) क्या कहूँ साहब, शत्रु भी इस यमघंट-योग में पैदा न हो ! (गाता है)

[लावनी]

हो सके अगर, तो तुमको राम-दुहाई,
यमघंट-योग में जन्म न लेना भाई !
जन्मा मैं उस दिन, तेल लगाकर वैसे,
काला कर डाला डाल धूप में ऐसे।
काला देखा, तो किया न आदर मा ने;
अपना न पिलाया दूध मुझे माता ने।
पी दूध गऊ का बुद्धि बैल की पाई।
यमघंट-योग० ॥ १ ॥

फिर मिलकर सबने हाय ! खा लिया भेजा ;
उस बचपन ही में मुझे मदरसे भेजा ।
था गुरु क़साई ; इतने चाँटे मारे,
गुद्दी कर दी पिलपिली, बेंत सटकारे ।
मैंने भी विद्या नहीं पढ़ी, रिस आई ।
यमघंट-योग० ॥ २ ॥

तब किया बाप ने बंद स्कूल का जाना ;
फिर मैं नौकर हो गया, मिला परवाना ।
हालाँकि ख़ुशामद की मैंने बहुतेरी,
अफ़सोस ! अचानक छूटी नौकरी मेरी ।
घर बैठा माथा ठोंक, खोल नेकटाई ।
यमघंट-योग० ॥ ३ ॥

फिर करना चाहा ब्याह पिता ने मेरा ;
लड़कीवालों को आकर घर-घर घेरा ।
जब देखा मेरी बुद्धि, रूप तब भाई,
कन्या की भी दूर खड़ी—हुई न सगाई ।
क्या कहूँ ! न मैंने चैन जन्म-भर पाई ।
यमघंट-योग० ॥ ४ ॥

(सबका प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजमहल का बाग़

(टहलती हुई चमेली का प्रवेश)

चमेली—अच्छा बाग़ है। जी चाहता है, रोज यहाँ आकर माला बनाऊँ और गाना गाऊँ। यहाँ सब कुछ अच्छा है। केवल यह बूढ़ा खूसट राजा दिन-रात मुझे जलाया करता है। मुझे अकेली पाते ही पास पहुँच जाता है; बढ़िया पोशाक की झलक दिखाता, आँखें मटकाता, खिजाबी मूछों पर ताव देता, बँधे हुए दाँत चमकाता और आकर बातचीत शुरू कर देता है। देखकर मेरी देह जैसे सुलग उठती है। राजा का मँझला लड़का भी बुरा नहीं है—लेकिन राजा का पोता एकदम सबसे बढ़कर है। सुना है, वह यहाँ रोज आकर कॉलेज का सबक़ याद करता है। देखूँ, आज आता है कि नहीं। मगर कहाँ, अभी तक तो नहीं आया। हाँ-हाँ, वह आ रहा है। तो फिर मैं इस पेड़ के सहारे बैठकर, गरदन को इस तरह बाईं ओर झुकाकर, इस तरह माला बनाऊँ और गीत गाऊँ, जैसे मैंने उसे देख ही नहीं पाया।—

(गाती है)

ऋतुपति लौटि प्रवासी आयो;

प्रकृति-प्रेयसी को आदर करि विरह-विषाद मिटायो।

नव पल्लव-दल-फूल-फलन सों करि सिंगार सजायो;

मंजु मंजरी-पुंज-रचित उपहार हार पहिरायो।

प्रफुलित्यु धनि रसाल पिक-रव सों अति अनुराग जनायो ;
छुके पराग अलागम रसिकन शुभ संवाद सुनायो।

(किशोरसिंह का प्रवेश)

किशोर—(स्वगत) यह लो, यहाँ अकेले बैठकर मौलसिरी के फूलों की माला बनाई जा रही है, और गीत गाया जा रहा है। निश्चय इसे मेरा आना मालूम हो गया है। लेकिन दिखाया जा रहा है कि जैसे कुछ देखा ही नहीं। सब ढोंग है। मैं भी यहाँ बैठूँ, जैसे कुछ देखा ही नहीं, इस तरह कविता उड़ाऊँ। (प्रकट)—

क्यों कम्यो चंद विधुंतुद आइ के,
क्यों अरविंदन भृंग छिपायो ;
क्यों भए श्वेत अश्वेत मराल,
वियोगिनि क्यों घिसि चंदन लायो।
क्यों मृगराज मृगीन कियो बश,
क्यों गजराज गजी सिर नायो ;
साँची कहौ पिय, भेद कहौं,
रजनीपति के घर क्यों रवि आयो।

चमेली—ए:, कविता पढ़ी जा रही है। निश्चय ही यह एक कोई प्रेम की रसीली कविता है। दुःख यही है कि मैं कुछ समझ नहीं सकी। ए:, छिपा-छिपाकर देखा जा रहा है, जैसे मैं कुछ देख ही नहीं रही हूँ। हूँ ! यह देखो, पेड़ के नीचे बाएँ हाथ के ऊपर सिर रखकर लेट गए। दाहने हाथ से पोथी के पन्ने उलटे जा रहे हैं। माँग भी बीच-बीच में देखी जा रही

है कि ठीक है या नहीं। यह सब किसके लिये जी, किसके लिये? यहाँ मेरे सिवा और कौन है? सब समझ रही हूँ। अब मैं निहायत दूधपीती बच्ची नहीं हूँ। आँखें किताब के ऊपर हैं, और मन यहाँ धरा हुआ है। मैं भी उठकर गाती हुई टहलूँ, जैसे कुछ जानती ही नहीं। (गाती है)—

प्रेम है सबल सहायक संग।
मन-मतंग पै यदि चित डोलै, नए निकालो ढंग;
प्रेम-विवश जोबन के मन में छाई नई उमंग।
या मग मिलै एक दूजे सों, ज्यों सागर में गंग;
दोऊ मिलि ह्वै जात एक, ज्यों हर-गौरी अरधंग।

किशोर—(स्वगत) हूँ! गाने का Subject बदल गया। निश्चय, मुझे देख पाया है। मैं कसम खाकर कह सकता हूँ। लेकिन दिखाया यह जा रहा है कि जैसे कुछ देखा ही नहीं पाया। यह गाना किसके लिये है जी, किसके लिये? यहाँ मेरे सिवा और कौन है? सब समझता हूँ चमेली, सब समझता हूँ। यह तो गाना गा रही है, अब मैं क्या करूँ? मैं तो गाना जानता ही नहीं। मैं कविता पढ़ाऊँ। मगर कोई मतलब की कविता तो याद ही नहीं पड़ती—आ गई—(प्रकट)—

दाढ़ी के रखैयन की दाढ़ी-सी रहत छाती,
बाढ़ी मरजाद जस हद हिंदुआने की;
कढ़ि गई रैयत के दिल की कसक सब,
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की।

और-और—हाँ—

मोटी भई चंडी बिन चोटी के सिरन खाय,
खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की।

चमेली—(स्वगत) यह कैसी कविता है। इस मौजूदा मामले के साथ तो इसका कुछ लगाव नहीं जान पड़ता। देखूँ।—और ज़रा—(गाती है)

प्रेम में पागल मत होना।
सोच-विचार समझकर करना, पड़े न पीछे रोना;
सुधा-स्वाद के लालच में पड़ विष के बीज न बोना।
पहले कसकर ख़ूब परख लो, पीतल है या सोना;
चमक-दमक में रीझ कहीं अपना सर्वस्व न खोना!

किशोर—(स्वगत) मैं भी कोई कविता पढ़ूँ। कम नहीं पढ़ सकता। (प्रकट)—

कछु गजपति के आहटन छिन-छिन छीजत शेर;
बिधु-बिकास बिकसत कमल कछु दिनन के फेर।
बिना तार के तार ज्यों बोडन के हग दौर;
ट्रेन खबर बिजुली-सदृश दौरन खटका जोर।

चमेली—(स्वगत) उहूँ! कुछ समझ में नहीं आया। अच्छा, तो चलना चाहिए। (गाती है)

हाँ जवानी का है दरिया चढ़ रहा;
प्रेम का तूफ़ान भी है बढ़ रहा।

हूँ मैं चक्कर में, न मिलती थाह कुछ;
उठ रहीं लहरें, है दिल भी बढ़ रहा।
क्या हुआ देगा किनारा खींचकर?
किसलिये किस बात पर है अड़ रहा?

(गाते-गाते प्रस्थान)

किशोर—(स्वगत) हाँ! अच्छा! मैं भी कविता पढ़ता हुआ दूसरी ओर से जाऊँ। (प्रकट)—

मल्लिकान मंजुल मलिंद मतवारे मिले,
मंद-मंद मारुत मुहीम मनसा की है;
कहै 'पद्माकर' त्यों नादिन नदीन नित
नागरि नवेलिन की नजर नसा की है।
दौरत दरेरे, देत दादुर सुदूँदै दीह,
दामिनी की दमक दिसान बिदिसा की है;
बरसबूँदन बिलोकी बगुलान बाग
बँगलान बेलिन बहार बरसा की है।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—राज-सभा

(राजा और उनके मुसाहब)

(राजा गाता है)

राजा—हो सकता मैं एक बड़ा ही वीर, मगर है सोच यही,
गोले-गोली की गड़बड़ में रहता नहीं दिमाग़ सही।
और, लगे बारूद बुरी बदबू उसकी है, नहीं पसंद;
खड़ी देख संगीन साँस हा हो जाती है जैसे बंद।
खुली देख तलवार मुझे सिर धड़ से अलग समझ पड़ता;
वाक्य-वीर रह गया खीझकर, नहीं इंद्र से भी लड़ता।
होता एक बड़ा भारी—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही।

राजा—हो सकता मैं प्रत्नतत्त्व का पंडित एक बड़ा भारी;
किंतु 'खोज' का नाम सुने ही आती जूड़ी की बारी।
देश बड़ा है गरम, बिछौना ख़ूब नरम, उस पर भाई!
प्यारी की फिर हँसी चरम, बेशरम नींद ख़ुद से आई।
कौन करे धुनधुन इस धुन में, अपने मन में सोच यही;
प्रत्नतत्त्व की चर्चा छोड़ी, स्त्री-तत्त्वज्ञ बना तब ही।
नहीं तो होता एक बड़ा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही।

राजा—हो सकता मैं एक महाकवि ऊँचे दर्जे का निश्चय;
पर कविता लिखने बैठूँ, तब नहीं काफ़िया होता तय।

भाषा रहती खड़ी, न बैठे, बैठा रहता निर्जन में ;
भाव न लाठी मारे पर भी उठते हैं मेरे मन में।
पैर हिलाऊँ, मूछ मरोड़ूँ लाख; मगर है सब बेकार ;
नीरव कवि मैं रहा इसी से कुढ़कर अपने मन में यार!
नहीं तो होता मैं ऐसा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही।

राजा—देखो, वक्ता राजनीति का हो सकता मैं कम-से-कम;
मगर खड़े होते ही मुझको स्मरण-शक्ति दे जाती दम।
रटी हुई बातें भी भूलें, ऐसी होती है उलझन;
मौक़ा पाकर भाव सभी विद्रोही हो डालें अड़चन।
हज़ार खाँसा, दाढ़ी के ऊपर भी अपना फेरा हाथ;
बैठकख़ाने का ही वक्ता रहा मगर तुम सबके साथ।
और नहीं तो एक बड़ा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही।

राजा—देखो, क्षमता बहुत बड़ी थी मुझमें और न कुछ थी ऊब;
केवल पहले धक्के ही से जाता अंत तलक मैं ख़ूब।
मिलता अगर सुयोग मुझे, तो होता एक कोई नामी—
डॉक्टर, बैरिस्टर या मिस्टर अथवा पब्लिक का हामी।
पर वह धक्का नहीं दिया अफ़सोस! किसी ने इसीलिये—
जो था वही रह गया, चिढ़कर ख़ूब पेग पर पेग पिए।
और नहीं तो—समझे—हाँ—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही।

राजा—क्यों मथुरा ! इसमें कोई संदेह है कि मैं मन पर रखता, तो एक बड़ा आदमी हो सकता था ?

मथुरा—कुछ भी नहीं।

राजा—कठिन ही क्या था ? क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—और नहीं तो क्या राजा साहब !

राजा—चाहने से एक बहुत बड़ा आदमी हो ही सकता था। लेकिन चाहा ही नहीं। हाँ जी राधेलाल, चाहा ही नहीं।

राधे०—चाहा ही नहीं। यही कारण है, और क्या !

राजा—चाहा नहीं। तुम क्या सोच रहे हो कुंजविहारी ?

कुंज०—राजा साहब, मुझे एकाएक एक पुराना क़िस्सा याद आ गया।

राजा—क्या क़िस्सा ? कुंजविहारी क़िस्सा कहने में उस्ताद है। —क्या क़िस्सा कुंजविहारी ?

कुंज०—क़िस्सा यही है कि एक मियाँ के पास एक कुत्ता था। वह उस कुत्ते की बड़ी बड़ाई किया करता था। कहता था कि वह कुत्ता चाहे, तो शेर का शिकार कर सकता है। लोग इसी पर विश्वास करते थे। एक दिन उस कुत्ते को एक सियार के आगे से दुम दबाकर भागते देखकर एक आदमी ने कहा—मियाँ, तुम्हारा कुत्ता चाहे, तो शेर का शिकार कर सकता है, फिर सियार को देखकर क्यों भागा जा रहा है ? इस पर मियाँ बोले—जरूर शेर का शिकार कर सकता है, मगर न चाहे, तो कुछ नहीं कर सकता। (भगवती का प्रवेश.)

राजा—वह लो, डॉक्टर साहब आ गए। (मुसाहबों से) हाल ही में मैंने इनको राज-परिवार के डॉक्टर के पद पर बहाल किया है। क्यों मथुरा, ठीक किया न ?

मथुरा—सो तो राजा साहब, आपने उचित ही किया है।

राजा—(बनवारी से) यह बहुत ऊँचे दर्जे के डॉक्टर हैं।

बनवारी—दूसरे डॉक्टर भादुड़ी हैं।

राजा—डॉक्टरी जानते हैं, सो तो जानते ही हैं, नाचना जानते हैं, और गाना भी जानते हैं। और—और आप क्या जानते हैं डॉक्टर साहब ?

भगवती०—सोना जानता हूँ, खड़ा होना जानता हूँ, ढेकली लगाना जानता हूँ।

(मुसाहब लोग अत्यंत हर्ष प्रकट करते हैं)

राजा—रानी को देख लिया डॉक्टर साहब ?

भगवती०—जी हाँ, बहुत अच्छी तरह।

राजा—कैसी हैं ?

भगवती०—वह इस समय भरपूर जवानी से भरी हैं।

राजा—अजी नहीं, उनका शरीर कैसा है ?

भगवती०—शरीर ख़ूब गोलमटोल और गदबदा है।

राजा—नहीं डॉक्टर साहब, आप मेरा मतलब नहीं समझे। उनकी तबियत का क्या हाल है ?

भगवती०—तबियत ! सो—या तो अच्छी हो जायँगी और या मर जायँगी, कोई चिंता नहीं है।

कुंज०—आप कहते क्या हैं ?

भगवती०—इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। अगर अच्छी हो जायँ, तो समझिएगा कि मेरे इलाज करने से अच्छी हुईं। और अगर मर जायँ, तो समझिएगा कि किसी डॉक्टर के बाबा की मजाल नहीं, जो उन्हें बचा सके।

राजा—डॉक्टर साहब, मेरा हाथ तो देखिए।

भगवती०—(नाड़ी देखकर) महाराज, आप बहुत चंगे हैं। जीते रहते मरने का कुछ खटका नहीं है।

कुंज०—सो यह ठीक है न ?

भगवती०—ठीक। एकदम निश्चित है। शायद आपने डॉक्टरी विद्या नहीं पढ़ी ? बहुत ही विचित्र विद्या है। इस विद्या के बल से जीते हुए आदमी को देखकर ठीक कह दिया जा सकता है कि वह जीता है। जान पड़ता है, आपने Themistocle's Treatise on Cerebral Congregation नहीं पढ़ा ? बहुत ही ऊँचे दर्जे की किताब है।—राजा साहब, मैं आपको अभी एक ऐसी दवा देता हूँ, जिसमें आपको जल्दी ही gout या diabetes हो जाय।

कुंज०—रोग होने के लिये दवा दोगे ?

भगवती०—शायद आप जानते नहीं हैं। जान पड़ता है, तो आपने Cicero's Oratorio on Fashionable Diseases नहीं पढ़ा। इस तरह का एक रोग हुए बिना कोई बड़ा आदमी नहीं हो सकता। कम-से-कम आज तक तो कोई नहीं हुआ।

राजा—लेकिन डॉक्टर साहब, मैं चाहता, तो एक बहुत बड़ा आदमी हो सकता।

भगवती०—यह तो तय है। इस बारे में आपके साथ मेरा जीवन बहुत मेल खाता है। आप चाहते, तो एक बड़े आदमी हो सकते थे, और मैं बड़ा आदमी होते होते रह गया, नहीं हुआ।—सो कोई चिंता नहीं है। मैं दवा देकर आपको बड़ा आदमी किए देता हूँ।

मथुरा—क्यों साहब, दवा देकर भी बड़ा आदमी बनाया जा सकता है?

भगवती०—ओः, तो मैं देखता हूँ, आपने होमियोपैथी नहीं पढ़ी। Symptomatic treatment विचित्र है! अद्भुत है!

कुंज०—तो शायद इससे खोई हुई गऊ भी पाई जा सकती है।

भगवती०—ओ!—अच्छा, सुनिए। एक दफ़ा एक आदमी की दादी मर गई। वह आदमी मूछ-दाढ़ी मुड़ाकर, क्रिया-कर्म वग़ैरह करके, मेरे पास आकर हाज़िर हुआ। मैंने, उसकी दादी कब मरी, किस तरह उसे जलाने के लिये ले गए, जलाने में कै मन लकड़ी लगी, क्रिया-कर्म में कितने रुपए लगे, तेरहीं के दिन कितने ब्राह्मण खिलाए गए, दक्षिणा कितनी दी गई, वग़ैरह-वग़ैरह symptoms ठीक मिलाकर, उस आदमी को एक dose दवा दी। जैसे दवा दी, वैसे ही उस आदमी ने घर जाकर देखा, उसकी दादी जी उठी, और ख़ुद उसके चेहरे पर दाढ़ी-मूछ निकल आई है।

कुंज०—(स्वगत) बाबा रे ! यह तो गप उड़ाने में मुझसे भी बढ़ गया। (हाथ जोड़कर भगवती से) हुजूर ! डॉक्टरी करने आए हैं, डॉक्टरी कीजिए; हम लोगों की रोजी न मारिएगा।

भगवती०—ना-ना, कोई चिंता न करो। अच्छा, तो मैं जाता हूँ। अभी किशोरसिंह को देखने जाना है।

राजा—क्यों ? किशोर को क्या हुआ है ?

भगवती०—वह चंद्रमा की ओर ताककर आजकल खूब लंबी-लंबी साँसें लेता है। यह एक बहुत कठिन रोग है। Xenophan's Analysis of Metaphysical Symptoms में इसे Peregrine Pickle कहते हैं। अच्छा, तो मैं अब जाता हूँ। (व्यस्त भाव से प्रस्थान)

राजा—यह आदमी भारी विद्वान् देख पड़ता है।

मथुरा—बड़ा भारी।

राधे०—इसे क्या तनख्वाह दी जाती है राजा साहब ?

राजा—साल में ३७॥) रुपए।

कुंज०—तब तो यह बेशक एक दिग्गज पंडित है।

राजा—देखा बनवारी, फर-फर करके न-जाने कितनी बड़ी-बड़ी किताबों के नाम ले गया !

बनवारी—ओः, बेशक !

(मोती को लेकर एक पहरेदार का प्रवेश)

पहरेदार—हुजूर ! ले आया। बहुत मुश्किल से हुजूर मिली है !

राजा—ले आया। अच्छा किया। मैं तो जानता ही था कि जब तुम-ऐसे होशियार, वफ़ादार आदमी को यह काम सौंपा है, तब काम पूरा हुए बिना नहीं रह सकता। यह गाना जानती हैं ?

पहरे०—हुजूर! बहुत अच्छा गाना गाती हैं। छप्पनछुरी के माफ़िक़ गाती हैं।

राजा—(मोती से) तुम्हारा नाम क्या है ?

मोती—मोती।

राजा—गाना जानती हो ?

मोती—मैं गाना नहीं जानती।

राजा—जानती क्यों नहीं हो। तुम्हारी उमर क्या है ?

मोती—मैं नहीं जानती।

राजा—हर बात के जवाब में 'नहीं जानती' के सिवा और कुछ नहीं। यह क्या बात है ?

पहरे०—हुजूर, इनकी उमर पंद्रह साल की है।

कुंज०—यह जब पैदा हुई थीं, तब शायद तूने ही जाकर बरस गिनी थी ?

राजा—अरे, कुछ गाओ—तुमको इनाम मिलेगा। (पहरेदार से) तुम जाओ। (पहरेदार का प्रस्थान)

मोती—(गाती है)

"काहे भयो पतिभ्कार रामा, हमरी बिरियाँ"

राजा—ना-ना, यह देहाती गाना नहीं, कोई उर्दू की ग़ज़ल गाओ।

मोती—उर्दू मैं नहीं जानती।

राजा—जानती क्यों नहीं हो। तुमको साथ में नाचना भी होगा।

मोती—मैं नाचना नहीं जानती।

राजा—सभी बातों के लिये 'नहीं जानती' कहने से काम नहीं चलेगा। मैं तुम्हें एक बनारसी जरी की साड़ी दूँगा। कोई उर्दू की ग़ज़ल गाओ।

(मोती गाती है)

[ग़ज़ल]

गर यार न हो साक़ी, पैमाना हुआ तो क्या ?
मामूर शराबों से मैख़ाना हुआ तो क्या ?
हम इश्क़ के बंदे हैं, मज़हब से नहीं वाक़िफ़ ;
गर काबा हुआ तो क्या, बुतख़ाना हुआ तो क्या ?
जब दर्द न हो दिल में, क्या इश्क़ मज़ा देवे ;
कहने को भला कोई दीवाना हुआ तो क्या ?
इस इश्क़ की आतिश से जलते हैं सभी कोई ;
गर शमा हुई तो क्या, परवाना हुआ तो क्या ?
माशूक़ के कानों तक जब तक नहीं पहुँचा मैं ;
यह अश्क़ मेरा यारो ! दुरदाना हुआ तो क्या ?
जहाँगीर-सा शहज़ादा था इश्क़ से वह ग़ाफ़िल ;
आबाद हुआ तो क्या, वीराना हुआ तो क्या ?

राजा—ख़ूब ! ख़ूब !

मुसाहब लोग—वाह ! तोफ़ा है ! क्या बात है ! सुभान-अल्ला !

राजा—अच्छा, तो तुम अब जाओ ।—ओ रे !—

(पहरेदार का प्रवेश)

राजा—अरे, इन्हें ले जाओ ! समझे ! पहुँचा दो !

(इशारा करता है)

पहरे०—जो हुक्म राजा साहब ।

(मोती को लेकर प्रस्थान)

राजा—(जाते-जाते मुसाहबों से) तुम लोग क्या कहते हो ?

मथुरा—हूँ ! (सम्मतिसूचक सिर हिलाता है)

राधे०—(प्रसन्नतासूचक भाव से) ज़रूर !

बनवारी—(वैसे ही भाव से) जाइए !

कुंज०—(उछलकर) आपके मतलब की चीज़ है !

(सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

स्थान—अंतःपुर

(सखियों का गीत)

बड़े मजे में हम सब हैं जी, आवे हँसी हँसें जी-भर ;
जो चाहें, सब जी-भर गावें आज़ादी से चल-फिरकर । बड़े० ।
चंद्रवदन को उठा-उठाकर बातें करतीं हँस-हँसकर ;
लाल मोहिनी नर को बानर कर दें जो देखें दम-भर । बड़े० ।

अगर खड़ी हों तो फिर हमको चलना-फिरना दूभर है ;
बैठें तो फिर खड़ी न होंगी, हमको जी किसका डर है ? बड़े० ।

(रानी का प्रवेश)

रानी—जानकी, भला बता तो सही, मैं अभी कहाँ से आ रही हूँ ?

जानकी—राजा के पास से ।

रानी—ठीक कहा !—सुंदर !

सुंदर—रानीजी !

रानी—जलम-जलम मुझे बूढ़ा ही वर मिले ।

सुंदर—इसके लिये क्या करोगी ? जो होना था, हो गया ।

रानी—नहीं सुंदर, मैं सच कहती हूँ, बूढ़ा मर्द जैसा जोड़ का दबाव और दुलार करना जानता है, वैसा और कोई नहीं ।—क्यों सलोनी, उससे बढ़कर भक्ति और श्रद्धा कौन कर सकता है ?

सलोनी—दबाव और दुलार तक तो समझ में आया ; मगर जोड़ की भक्ति और श्रद्धा कैसी ? जोड़ू देवता है या गुरू ?

रानी—तू भी बेवक़ूफ़ ही है । भक्ति और श्रद्धा के माने यहाँ प्यार और मुहब्बत हैं । श्यामा, अगर तू मेरे ऊपर राजा का प्यार एक बार देखती !—बैठने को कहने से बैठते हैं, और उठने को कहने से उठते हैं !

सुंदर—तो यह कहो कि तुम उन्हें बंदर का नाच नचाती हो ।

रानी—वह राजा आ रहे हैं । तुम लोग आड़ में चली जाओ । (सखियों का प्रस्थान)

(चमेली का प्रवेश)

रानी—ओः !—राजा नहीं हैं। चमेली !

चमेली—क्यों, क्या मैं पसंद नहीं हूँ ?—ख़ैर, तुम यहाँ हो और मैं तुमको खोज-खोजकर हैरान हो रही हूँ।

रानी—क्यों ? क्या हुआ ?

चमेली—तुम, बहन, अपने राजा को ज़रा भी नहीं देखतीं। वह दिन-रात मेरे पीछे-पीछे फिरा करते हैं।

रानी—यह क्या कह रही हो ?

चमेली—सच, मुझे ज़रा भी चैन नहीं है।

रानी—नहीं चमेली, यह तुम झूठ कह रही हो।

चमेली—अच्छा, क्या एक दिन अपनी आँखों से देखना चाहती हो ?

रानी—हाँ, देखना चाहती हूँ।

चमेली—सच ?

रानी—हाँ, सच।

चमेली—अच्छा, तो एक दिन दिखा दूँगी। लो, वह राजा इधर ही आ रहे हैं। मैं अब जाती हूँ। तुम्हें कल या परसों ही दिखा दूँगी। (प्रस्थान)

(राजा का प्रवेश)

राजा—रानी, तुम यहाँ अकेली क्यों बैठी हो ?

रानी—लो, अब दुकेली हो गई।

राजा—चमेली क्यों चली गई ?

रानी—तुमको देखकर।

राजा—क्यों, मुझसे शरमाती क्यों है?

रानी—मैं भी तो वही कहती हूँ कि राजा बूढ़े आदमी हैं, उनसे काहे की शरम?

राजा—ना रानी, मैं अभी वैसा बूढ़ा नहीं हुआ।

रानी—वह भी तो यही कहती है।

राजा—सच? वह भी यही कहती है?

(संतोष का भाव दिखाता हुआ हँसता और मूछों पर ताव देता है)

रानी—वह कहती है कि जो मर्द साठ बरस की उमर में ब्याह कर सकता है, वह बूढ़ा होने पर भी जवान का बाबा है।

राजा—ना रानी, मेरी उमर अभी तक साठ बरस की नहीं हुई।

रानी—और अगर साठ बरस की उमर हो भी, तो क्या है। तुम सचमुच देखने में अपने लड़के गोपालसिंह से भी छोटे जान पड़ते हो।

राजा—छोटा जान पड़ता हूँ—क्यों? हें-हें-हें-हें।

(संतोष का भाव दिखाता है)

रानी—जान नहीं पड़ते हो, तो और क्या। गोपाल तो तुम्हारा लड़का ही नहीं जान पड़ता।

राजा—(स्वगत) गाली देती है। (प्रकट) मगर रानी, गोपाल मेरा ही लड़का है।

रानी—मैं क्या कहती हूँ कि नहीं है? मैं कहती हूँ कि देखने

से जान नहीं पड़ता। बल्कि तुम्हारा पोता किशोरसिंह देखने में कुछ-कुछ तुम्हारा लड़का-सा जान पड़ता है।

राजा—लेकिन रानी, किशोर तो मेरा लड़का नहीं है।

रानी—तुम्हारा लड़का क्यों होने लगा। तुम्हारा लड़का होना तो उसके बाप के नसीब में था। (किशोर का प्रवेश)

राजा—क्यों भई, यहाँ किसलिये आए हो ?

किशोर—ओः ! दादाजी ? मैं समझा था—

राजा—क्या समझे थे ? मुझे देखकर क्या श्रीकृष्णानंदन कामदेव का धोखा हुआ था ?

किशोर—जी नहीं—आपको देखकर पवननंदन हनुमान् का खयाल हो आया था। (प्रस्थान)

रानी—भला बताओ, किशोर यहाँ क्यों आया था ?

राजा—क्यों ?

रानी—चमेली की खोज में आया था ?

राजा—एँ—चमेली की खोज में—एँ सो—

रानी—मैं कहती हूँ, किशोर के साथ चमेली का ब्याह क्यों न कर दिया जाय।

राजा—एँ—सो—सो—सो किस तरह होगा ?

रानी—क्यों न होगा ? किशोर की उमर ब्याह के लायक़ हो गई है। चमेली की भी उमर १५-१६ बरस की होगी। आप की एक ही संतान होने के कारण अब तक उसका ब्याह नहीं किया गया। अब तो उसका ब्याह होगा ही।

राजा—हाँ—सो—चमेली का ब्याह अगर अभी न हो, तो क्या कुछ हर्ज है ?

रानी—क्यों ? क्या तुम्हारा ख़ुद उसके साथ ब्याह करने को जी चाहता है ?

राजा—नहीं जी—और तुम्हारे रहते वह हो ही कैसे सकता है ?

रानी—कहो, तो न हो, मैं मर ही जाऊँ।

राजा—(स्वगत) आहा, ऐसा दिन कब होगा ? (प्रकट) नहीं जी, तुम क्यों मरोगी ?

रानी—मैं कहती हूँ कि तुम मेरे मरने की राह क्यों देखते हो ? और अगर मेरे मरे बिना तुम ऐसा न कर सकते हो, तो फिर मैं मर ही क्यों न जाऊँ। तुम भी मज़े से और एक ब्याह कर लो। चार ब्याह तक तो हो गए हैं—पाँचवाँ भी सही।

राजा—ना रानी, अब की तुम मर भी जाओगी, तो मैं और ब्याह नहीं करूँगा।

रानी—जान पड़ता है, तुमने यह ठीक कर रक्खा है कि मैं तुम्हारे आगे ही मरूँगी। (क्रोध का भाव दिखाकर) सो मैं क्यों मरूँ ? तुम्हारा जी चाहे, तो तुम मर जाओ। (प्रस्थान)

राजा—इसने कैसे जान लिया ! ये औरतें ज़रूर जानती हैं ! मर्द लोग जो करतूत करते हैं, सो तो जानती ही हैं—और जो करतूत नहीं करते हैं, उसकी भी ख़बर पहले से पा जाती हैं।

आहा ! मनोविज्ञान का ऐसा एक तत्त्व मैंने खोज निकाला। पास कोई आदमी भी नहीं है, जो शाबाशी दे। (प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—चमेली के सोने का कमरा

(चमेली अकेली)

चमेली—दीदी अभी तक क्यों नहीं आईं ? मैंने आज उन्हें राजा के ढंग दिखलाने के लिये कहा था। राजा तो अभी मेरे पास आकर पहुँच जायगा, बल्कि आता ही होगा। मगर दीदी कहाँ रह गईं। (व्यग्रता का भाव दिखाती है) आः, देखती हूँ, सब खेल मिट्टी हुआ चाहता है।—(नेपथ्य की ओर देखकर) खैर, वह आ तो रही हैं—

(रानी का प्रवेश)

चमेली—दीदी आ गईं ? मैं तुम्हारी ही राह देख रही थी।—हाँ, तो आज जरूर ही देखोगी ?

रानी—देखने तो आई ही हूँ।

चमेली—अच्छा, तो तुम इस मसहरी के उस पार खाट के पीछे चुपचाप बैठी रहो। वहाँ से सब तमाशा साफ़-साफ़ देख सकोगी। मगर देखो, अखीर तक चूँ न करना। तुम जानती हो कि तुम्हारे स्वामी तुम्हारे सिवा और किसी को नहीं जानते।

वही तुम्हारा भ्रम तुमको आज दिखाए देती हूँ। जाओ, छिप रहो। मैं राजा से कह दूँगी कि तुम मौसी के यहाँ यों ही सबको देखने-भालने गई हो, शाम तक वहाँ से लौट आओगी। लेकिन देखो बहन, अंत तक चुप रहना।

रानी—अच्छा, यही सही।

चमेली—और देखो बहन, अंत को मुझे इस बारे में कुछ कहना-सुनना नहीं।

रानी—नहीं—कुछ नहीं कहूँगी।

चमेली—अच्छा, तो अब जाओ—छिप रहो। मैं तब तक टहल-टहलकर गीत गाती हूँ। (रानी छिप रहती है)

(चमेली गाती है)

(ठुमरी—पीलू)

उन बिन कटें कैसे रतियाँ
ढूँढ़-ढूँढ़ मैं हारी गुइयाँ, नहीं सैयाँ मिलत—
हाँ उन बिन कटें कैसे रतियाँ।
हिया में रहत तऊ दूर बसत हैं, करत हाय! हम सब घतियाँ।
जिया की तपन यह कैसे मिटत—उन०।

(राजा का प्रवेश)

राजा—चमेली, तुम यहाँ अकेली हो?

चमेली—हाँ, आप ही के आने की राह देख रही थी।

राजा—यह क्या, आज तो बड़ी मेहरबानी देख पड़ती है। मैं आज किसका मुँह देखकर उठा था?—रानी कहाँ हैं?

चमेली—वह मौसी के यहाँ मिलने-जुलने गई हैं—शाम तक आवेंगी। (बैठ जाती है)

राजा—यह तो बहुत अच्छी बात है।

(चमेली के पास ही जाकर बैठता है)

चमेली—यों लिपटे क्यों जा रहे हो ?

राजा—लिपट ही जाऊँगा, तो क्या हर्ज है ! यहाँ हम दोनो के सिवा और कोई तो है नहीं।

चमेली—अगर कोई आ पड़े !

राजा—कौन आ पड़ेगा ! रानी तो हैं ही नहीं, जिनका खटका था।

चमेली—नहीं जी, अब मुझसे हेल-मेल बढ़ाकर क्या होगा ? मैं तो कल अपने बाप के घर जा रही हूँ।

राजा—(चौंककर) ऐं ! यह क्या !

चमेली—अब मेरा यहाँ रहना ठीक नहीं जँचता। मुझे यहाँ आए कितने दिन हो गए !

(राजा की ओर अनुराग-पूर्ण दृष्टि से देखती है)

राजा—मैं तुम्हें छोड़ूँगा, तब तो जाओगी। (हाथ पकड़ता है)

(अलक्षित भाव से किशोरसिंह का प्रवेश)

किशोर—(देखकर स्वगत) हूँ ! देखता हूँ, राजा के साथ चमेली का बहुत हेल-मेल बढ़ गया है। हजार हो, औरतों की जाति का स्वभाव कहाँ जायगा। दुनिया में ये औरतें सिर्फ़ दौलत को ही सबसे बढ़कर समझती हैं। लेकिन इस खूसट को

क्या सूझी है ! ख़ैर, ज़रा छिपकर देखूँ तो सही, कहाँ तक नौबत पहुँचती है। (आड़ में छिप जाता है)

चमेली—नहीं जी, दीदी की भी इच्छा नहीं है कि मैं अब यहाँ रहूँ।

राजा—नहीं, तुम्हारा जाना हो ही नहीं सकता।

चमेली—नहीं, मुझे जाना ही होगा। आज रानी ने मेरा बड़ा अपमान किया है। कहा कि राजा के घर के छप्पन भोग खाकर अब तुझे बाप के घर की दाल-रोटी क्यों रुचेगी ? (आँखों में आँसू आने का ढोंग दिखाकर) मैं जैसे तुम्हारे यहाँ खाने-पीने के लिये ही आई हूँ।

राजा—रानी की इतनी मजाल ! रानी क्या अपने बाप के घर से लाकर तुमको खिलाती-पिलाती है ? तुम मेरा खाती-पीती हो, उसमें उसका क्या है ?

(पास एक शब्द होता है)

राजा—(चौंककर) यह क्या है !

चमेली—वह और कोई नहीं, बिल्ली है। उसी की कूद-फाँद का कुछ खटका हुआ है।

राजा—चमेली, तुम्हें मेरे सिर की क़सम, जाना नहीं।

चमेली—छी-छी, अपने सिर की क़सम न खाना। मैं कल तो ज़रूर ही जाऊँगी।

राजा—(दीन भाव से) तुम चली जाओगी, तो मेरा क्या होगा चमेली !

चमेली—सो मैं क्या जानूँ ?

राजा—ना, दोहाई है चमेली, तुम न जाना।

चमेली—ख़ैर, अब आप इतना कह रहे है, इससे कुछ दिन और न जाऊँगी।

राजा—बस-बस। तुमने मुझे जिला लिया। ख़ुशी के मारे मेरा नाचने को जी चाहता है। (नाचता है) तो फिर चमेली—

चमेली—क्या ?

राजा—एक—(चुंबन चाहता है)

चमेली—आः ! क्या करते हो। (हट जाती है)

(राजा पीछे-पीछे जाकर उसका हाथ पकड़ता है)

राजा—आहा ! तुम्हारा हाथ कैसा नरम है चमेली !

चमेली—रानी के हाथ से बढ़कर ?

राजा—कहाँ तुम्हारा हाथ, कहाँ रानी का हाथ ! तुम्हारा हाथ जैसे कमल का फूल है, और रानी का हाथ जैसे ईंट है।

चमेली—(बनावटी लज्जा का भाव दिखाकर) आप ख़ुशामद की बातें करना ख़ूब जानते हैं।

राजा—ख़ुशामद नहीं चमेली, सच कहता हूँ ! कैसा नरम हाथ है ! जान पड़ता है, तुम्हारे और अंग इससे भी मुलायम हैं। (चिपटाना चाहता है)

चमेली—अरे-अरे, आप यह कर क्या रहे हैं ?—

राजा—प्राणेश्वरी !—(चुंबन)

चमेली—अरे, दौड़ो-दौड़ो। मार डाला—

(रानी मसहरी के पीछे से एक लंबा तकिया लिए निकलती है, और राजा की पीठ पर धमाधम जमाती है। उधर किशोर भी एक लंबी लाठी लेकर राजा की ओर झपटता है)

राजा—एँ-एँ-एँ, यह क्या—तुम-तुम-तुम हो!

रानी—हाँ-हाँ-हाँ, मैं-मैं-मैं हूँ! (मारती है)

राजा—रानी, तुम समझी नहीं? मैंने बहनोई के नाते से चमेली को प्यार किया था। (चारों ओर भागता है)

रानी—और शायद दादा के नाते से लिपटाया था!

(राजा के पीछे-पीछे दौड़ती और मारती है)

(पर्दा गिरता है)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—अंतःपुर

(चमेली और रानी)

चमेली—क्यों जी, देख लिया ?

रानी—हाँ, देख लिया। ये मर्द सब कुछ कर सकते हैं!

चमेली—तुमको तो विश्वास ही नहीं होता था।

रानी—सचमुच मेरा जी चाहता है कि गले में फंदा लगाकर मर जाऊँ।

चमेली—तब तो फिर बूढ़ा कल ही एक और ब्याह कर लेगा।

रानी—सच! मगर मुँह से कहता है कि मेरे मरने पर कभी और ब्याह नहीं करेगा। एक दफ़ा मरकर देखने को जी चाहता है कि वह सचमुच ब्याह करता है कि नहीं! यह मैं जानती हूँ कि वह ब्याह जरूर करेगा, तो भी एक दफ़ा मरकर देखने को जी चाहता है।

चमेली—देखने से फ़ायदा ?

रानी—एक तरह का सुख मिलेगा।

चमेली—क्या सुख मिलेगा ?

रानी—चोर को माल-समेत पकड़ने में सिपाही को जो सुख मिलता है, वही सुख मिलेगा।

चमेली—तो तुम यह तमाशा देखना चाहती हो ?

रानी—चाहती तो जरूर हूँ; पर देख कैसे सकती हूँ ?

चमेली—मरकर देखो।

रानी—मरकर भी कहीं फिर देखा जा सकता है ?

चमेली—मैं क्या तुमसे सचमुच ही मरने के लिये कहती हूँ। हम लोग यह खबर उड़ा देंगी कि तुम मर गई हो।

रानी—लेकिन इस तरह एकाएक मरने पर बूढ़ा विश्वास क्यों करेगा ?

चमेली—क्यों नहीं विश्वास करेगा। वह मामूली बेवक़ूफ़ नहीं है। डॉक्टर से क्या तुम नहीं कहला सकती हो कि तुम्हारी मौत हो गई ? डॉक्टर के कहने से राजा को फ़ौरन् विश्वास हो जायगा।

रानी—हाँ, डॉक्टर से तो कहला सकती हूँ। अच्छा, मान लो कि मैं इस तरह मर गई। उसके बाद ?

चमेली—उसके बाद कुछ दिन तुम मेरे बाप के यहाँ छिप-कर रहना। फिर देखना, क्या होता है। अच्छी बात है। तुम यह देखना चाहती हो—देखो। वह लो, तुम्हारा पोता आ रहा है। अब मैं जाती हूँ।

रानी—जाती क्यों हो ? वह तो कोई ग़ैर नहीं है।

चमेली—तुम्हारा ग़ैर नहीं है। मेरा कौन है ? (प्रस्थान)

रानी—किशोर के साथ चमेली का ब्याह हो, तो बड़ा अच्छा हो। दोनो की इच्छा यही है। मगर मारे शरम के कोई कह नहीं सकता। (किशोर का प्रवेश)

किशोर—दादी !

रानी—क्यों किशोर ?

किशोर—यहाँ बैठकर सबक़ याद करने आया था। सो सबक़ क्या याद करूँगा, आपको देखकर जो कुछ याद किया था, वह भी भूल गया।

रानी—हाँ !—अच्छा, मेरा एक काम कर दोगे ?

किशोर—क्या ?

रानी—तुम जाकर डॉक्टर को इस बात पर राज़ी कर दो कि वह कह दे—मैं मर गई हूँ।

किशोर—यह कैसे ?

रानी—मेरा मरने को बहुत जी चाहता है।

किशोर—तो डॉक्टर को इसके लिये क्यों राज़ी करना होगा ?

रानी—डॉक्टर राजा से कह दे कि मैं मर गई हूँ।

किशोर—मगर डॉक्टर ऐसी झूठी बात क्यों कहेगा ?

रानी—वह झूठी बातें हज़ारों कहा करता है। दस-पाँच रुपए देने से तोते की तरह जो कहोगे, वही कह देगा।

किशोर—ना, यह काम मुझसे न होगा। मैं डॉक्टर को घूस देकर उससे झूठ क्यों कहलाऊँगा ?

रानी—तुम्हारा भी एक फ़ायदा करा दूँगी। तुम अगर यह

काम कर दोगे, तो चमेली के साथ तुम्हारा ब्याह करा दूँगी। समझे?

किशोर—(सिर झुकाकर) मगर वह भी राजी हों, तब तो।

रानी—इसका ज़िम्मा मैं लेती हूँ! अब बताओ, तुम यह काम करने के लिये राज़ी हो?

किशोर—राज़ी हूँ।

रानी—(हँसकर) सो तो मैं पहले ही से जानती थी। अच्छा, तो अब जाओ। (रानी का प्रस्थान)

किशोर—तमाशा तो बुरा नहीं। औरतों की बहुत तरह की साधें होते सुना जाता है, लेकिन मरने की साध एकदम नई बात है। हाय! ऐसे चंचल स्वभाववाली जाति से भी ब्याह करने के लिये ये मर्द पागल हो उठते हैं? मगर औरतों से ब्याह करना ऋषियों की चलाई पुरानी चाल है—मानना ही पड़ता है। (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजा की बैठक

(राजा के मुसाहब लोग)

मथुरा—अब तो भई, नौकरी नहीं हो सकती।

राधे०—ठीक कहते हो।

कुंज०—बहुत-से रईसों की मुसाहबत की है, लेकिन ऐसे कोरे अहमक़ से कभी काम नहीं पड़ा।

बनवारी—सच है भाई, इतनी खुशामद करो, मगर फ़ायदा कुछ नहीं होता।

कुंज०—क्या कहूँ भाई, इतने दिनों तक Art के हिसाब से खुशामद की Study की गई, लेकिन यह राजा साला एक-दम मूर्ख है। कुछ समझता ही नहीं। आज से बस साफ़-साफ़ जवाब है।

राधे०—अरे भई, ज़रा धीरज धरो।

कुंज०—धीरज जाय चूल्हे में!

मथुरा—दुख और कुछ नहीं, यही है कि साले ने Appreciate नहीं किया।

बनवारी—साला यह नहीं समझता कि पाँच रुपए महीने में भले आदमी का गुज़र नहीं होता।

राधे०—अजी, ऊपर से भी तो है।

बनवारी—ऊपर से क्या है?

राधे०—यही बरांडी—ह्विस्की वग़ैरह।

मथुरा—बरांडी—ह्विस्की तो ठीक है। वग़ैरह क्या है?

कुंज०—अजी राधेलाल, तुम्हारी बात पर मुझे एक पुरानी रवायत याद आ गई।

राधे०—वह क्या?

कुंज०—यही, एक गवैए उस्ताद को एक सूम के घर गाने का बयाना मिला। उस्तादजी अफ़ीमी थे। रात-भर सूम की महफ़िल में चिल्लाकर उस्तादजी घर आए, तो उनकी जोरू ने पूछा—

कितने रुपए का क़रार था ? उस्ताद ने कहा—१४) रुपए,१४) रुपए। जोरू ने पूछा—कितने रुपए पाए ? उसने कहा—लग-भग सभी रुपए मिल गए हैं। जोरू ने कहा—कहाँ हैं ? मियाँ बोले—ये सात रुपए लो, बाक़ी सात के लिये झगड़ा चल रहा है। जोरू ने कहा—तब तो कहो, सभी मिल गया; और ऊपर से ? तब उस्ताद ने गाल पर जूते के निशान दिखाकर कहा—यह देख लो। सूम ने गवाकर जूते मारकर गवैए को निकाल दिया था। हम लोगों की यह 'ऊपर से' भी वैसी ही है।

मथुरा—ख़ूब कहा, ख़ूब कहा भैया, साला इसी तरह का आदमी है।

बनवारी—फिर इसका उपाय क्या है ?

राधे०—उपाय और क्या है ? बैठे-बैठे 'बैठे की बेगार' टाली जाय। जो मिल जाय, वही सही।

कुंज०—तुम लोग बेगार टालो। अब की मैं 'दो टूक' करके लंबा होता हूँ। उमर भी ढल आई; अब नौकरी नहीं निभ सकती !

राधे०—तुम्हें भाई, काहे की चिंता है ! तुम्हारे तो अब लड़के-बाले हैं नहीं।

बनवारी—तुम तो बीच-बीच 'दो टूक' करने में कसर नहीं रखते।

कुंज०—अरे, वह भी तो ख़ाक उस साले की समझ में नहीं आता ! यही तो दुःख है। साला समझता, तो अब तक मुझे अर्ध-

चंद्र (गरदनिया) दिलवाकर निकाल देता। उससे कुछ तो जी को संतोष होता कि मैंने जो भला-बुरा कहा, उसे साले ने समझ लिया।

राधे०—चुप रहो जी, चुप रहो जी ! साला आ रहा है।

(राजा का प्रवेश)

राजा—हें-हें-हें-हें-हें।

मुसाहब—(साथ-ही-साथ) हें-हें-हें-हें-हें।

कुंज०—हिं-हिं-हिं-हिं-हिं।

राजा—बड़े मजे की बात है हें-हें-हें-हें-हें।

मुसाहब—(साथ-ही-साथ) बड़ी—हें-हें-हें-हें-हें।

राजा—क्यों जी कुंजविहारी, आज बहुत घोड़े की तरह हिनहिना रहे हो ?

कुंज०—राधे की बोली भूल गया हूँ।

राजा—जानते हो मथुरा, कल नई रानी ने क्या कहा ?

मथुरा—क्या कहा राजा साहब ?

राजा—कहा, राजा साहब, इन कई एक गउओं को महीना देकर क्यों पाल रक्खा है ? गोशाले में भेज दो, या छोड़ दो, जाकर चरें। हें-हें-हें-हें-हें।

मुसाहब—हें-हें-हें-हें-हें, बड़े मजे की बात तो है राजा साहब।

राजा—जानते हो बनवारी, मैंने इसका क्या जवाब दिया ?

बनवारी—ना, सो तो ठीक-ठीक नहीं जानता।

राजा—मैंने जवाब दिया कि रानी, मैं श्रीकृष्ण हूँ, और तुम राधिका हो—तुम्हारी सखियाँ गोपी हैं। यह सब तो ठीक हुआ—मुसाहबों को गऊ समझ लो! हें-हें-हें-हें-हें।

कुंज०—(गाता है)

रहै वा वृंदावन की याद;

भूलत नहिं गोपी, गो, गोकुल वा गोरस को स्वाद।

राजा—यह क्या कुंजविहारी, तुम तो गाना गाने लगे।

कुंज०—यह रासलीला हो रही थी न? मैं समझा कि आप गोचारण-लीला का स्वाँग कर रहे हैं।

राजा—(हँसकर) तुम सचमुच भाँड़ ही हो।

कुंज०—हम लोग ग़रीब आदमी ठहरे, हुजूर के-ऐसे भले आदमी होना हमें कहाँ नसीब हो सकता है।

राजा—जाने दो—तुम्हारे मसखरेपन में मैं, न-जाने क्या कह रहा था, भूल गया। क्या कह रहा था बनवारी?

बनवारी—हाँ यही, (राधेलाल से) बताओ न जी।

राधे०—हाँ, वह यही (मथुरा से) बताओ न जी मथुरा।

मथुरा—वही रानी की बात।

राजा—हाँ-हाँ, ठीक है—ठीक है। मथुरा की याददाश्त बहुत तेज है।

राधे०—ऐसी, जैसे राजिस की छुरी।

राजा—मुझे सब बातें याद ही नहीं रहतीं।

राधे०—यही तो ऐब है।

मथुरा—ऐब ? राजा साहब का ऐब ?

राजा—नहीं जी मथुरा, वह ऐब ही है।

मथुरा—ऐब ! बड़ा भारी ऐब है।

राजा—देखो बनवारी, मुझमें यही एक ऐब है।

बनवारी—और सब गुण हैं।

राजा—नहीं तो हालाँकि उमर कुछ ज्यादा हो गई है।

राधे०—सो उमर अभी आपकी ऐसी क्या ज्यादा हुई है राजा साहब।

राजा—ना, कुछ ज्यादा क्यों नहीं हुई है।

राधे०—यों ही कुछ।

राजा—तो भी अभी मेरे बदन में ताक़त है।

(राजा अपना हाथ बढ़ाकर दिखाता है। सब लोग हाथ दबाकर देखते हैं, और हाथ-पैर-मुँह मटकाकर विस्मय का भाव दिखाते हैं)

राजा—उसके बाद विद्या में—

बनवारी—एकदम साक्षात् बृहस्पति हैं।

राजा—और भलमनसी में—

मथुरा—धर्मपुत्र युधिष्ठिर हैं।

राजा—और हालाँकि मैं इधर जरा—समझे कि नहीं—लेकिन तो भी कौन साला कह सकता है कि मैंने किसी का कुछ चुराया है, या किसी का कुछ ठग लिया है, या कुछ जाल किया है ?—कौन कह सकता है ?

कुंज०—किसकी जान फालतू है ?

राजा—देखो—(गाना)

बहादुरी की बड़ी बड़ाई किया ही करता था रामरतना ;

मुसा०—लगा के दम या तो ताड़ी पीकर, बहकना होगा हुज़ूर इतना।

राजा—वो एंठता खूब, ढीठ उस दिन लड़ाई लड़ने को आया हमसे ;

मुसा०—हुज़ूर, इतनी मजाल उसकी ! उड़ा ही देना था उसको बम से।

राजा—कहा यों मैंने, अबे तो आ जा, मैं देखूँ—कैसा है तू बहादुर !

लिपटके उसने पटक दिया, तब हुआ मैं आपे से अपने बाहर।

अजीब गुस्से से हाल मेरा हुआ, लगा काँपने मैं थर-थर,

कहा कि दो-चार हाथ मैं भी जमा दूँ उसके या फोड़ दूँ सर।

मगर समझकर उसे कमीना, बचा गया टार, बाँध धोती ;

मुसा०—किया बहुत ठीक यह, नहीं तो ज़रूर ही मार-काट होती।

राजा—केदार लाला—वही रिज़ाला—बड़ा अगतपन की दोक पीटे !

मुसा०—अजी वही, हाँ, बचा था जिसका हरामज़ादा भरास घसीटे।

राजा—लिए थे उससे हज़ार रुपए, वो माँगने एक रोज़ आया ;

मुसा०—ये देखिए, कमबख़्त है कैसा, हुज़ूर का भी न ख़ौफ़ खाया।

राजा—तड़पके मैंने कहा—अबे जा ! तू बकता क्या है ? नशा पिया है ?

ये कैसे रुपए ? हैं किसके रुपए ? बना हुआ तू क़िमारिया है !

मुक़द्दमा कर, अगर है सच्चा, न एक कच्चा मुझे दिया है ;

सुअर का बच्चा ! लफंगा लुच्चा ! मुझे भी टुच्चा समझ लिया है ?

चला गया, गाज गिर पड़ी ज्यों, उदास होकर केदार घर को ;

वो ले के रुपए करे ही गा क्या ? उड़ा ही देगा ज़रूर ज़र को।

इसी से मैंने चता बताई—

मुसा०— हुज़ूर, साला हुआ है वाही !

किया बहुत ठीक, कौन देगा केदार की ओर से गवाही ?

राजा—गनेस—वह छोकरा—वही जो वकील अब की हुआ है साला,

बना है विद्वान्, हर जगह पर रखा चहे अपनी बात बाला।

मुसा०—हहः हहः हः ! गनेस ? हः हः ! गनेस भी आदमी है कोई ?

राजा—बहस को आया था पास मेरे; कहे "न मुझमें कमी है कोई।"

मुसा०—अजी वो अहमक़ है, कोरा अहमक़ ! नमकहरामी है उसका पेशा ;

राजा—बिगड़ के मैंने कहा, तो आ जा, हमा-हमी क्यों करे हमेशा ?

जहाज़ हूँ, कान हूँ इलम की; समझ लिया क्या है तूने मुझको ?

चटक-मटक सब धरी रहेगी, अभी पटक दूँगा देख तुझको !

लपक के दो लाठियाँ लगाई जो पीठ पर मैंने धम-धमाधम,

तो गिर पड़ा चित—

मुसा०— उचित यही था, हुज़ूर यह दी सज़ा बहुत कम।

राजा—उठा, तो भागा वो जान लेकर, उसे ख़बर थी न मेरी रिस की;

मुसा०—प्रमाण लाठी है तर्क में भी; है भैंस उसकी है लाठी जिसकी।

(डॉक्टर भगवती का प्रवेश)

राजा—वह लो, डॉक्टर साहब आ गए।—क्यों जी, रानी कैसी हैं ?

भगवती०—ख़ूब हैं।

राजा—ख़ूब का क्या मतलब ?

भगवती०—उनका मतलब ख़ूब याने अच्छा है।

राजा—उनका क्या मतलब है ?

भगवती०—मतलब यही है कि वह कुछ दिनों में राजा साहब को एक लड़का या लड़की उपहार देगी।

राजा—कहते क्या हो! सच!

भगवती०—नहीं तो क्या आप झूठ समझते है? मैं क्या झूठ कह सकता हूँ। आप जानते हैं राजा साहब, इन नसों में प्रतापकुँअरि का खून है।

कुंज०—बाप रे!

राजा—देखते हो राधेलाल, तब भी साले बूढ़ा कहते हैं!

भगवती०—Libel! राजा साहब की उमर ही अभी क्या होगी।—मैं बताए देता हूँ। अपने दाँत दिखाइए राजा साहब।

कुंज०—राजा साहब बैल या घोड़ा हैं, जो दाँत देखकर उमर बताओगे।

राजा—ना-ना, देखो ना। (दाँत दिखाता है)

भगवती०—वही तो, ऐसा अचरज तो मैंने कभी देखा ही नहीं।—राजा साहब, आपकी उमर यही पचीस के लगभग होगी?

कुंज०—(स्वगत) देखता हूँ, यह खुशामद में भी उस्ताद है!

राजा—(संतोष-सूचक स्वर में) नहीं डॉक्टर साहब, इससे अधिक है।

भगवती०—दाँत देखने से तो अधिक नहीं जान पड़ती।

कुंज०—दाँत देखकर तो उमर आपने ठीक कर ली डॉक्टर साहब, लेकिन आप क्या जानें, ये दाँत असली हैं या नक़ली?

भगवती० - नक़ली ही हैं। मैंने भी तो ठीक यही सोचा था। (कुंजविहारी से) साहब, जान पड़ता है, आपने Addison's Historical Synthesis of Teeth नहीं पढ़ा। पढ़िएगा। बहुत ऊँचे दर्जे की किताब है। (घड़ी देखकर) ओः दस बज गए! अब जाता हूँ। राह में राजा की लौंडी को देखकर जाना होगा। उसे Concatenation of the right abdomen होकर Case ज़रा Complicated हो गया है। उसका इलाज करने में कसर नहीं रक्खूँगा।　　(व्यस्त भाव से प्रस्थान)

राजा—देखते हो बनवारी! देखते हो!

बनवारी—उः!

राजा—इस समेत मेरे पंद्रह लड़के-बाले हुए। समझे राधेलाल। पं—द—र—ह। राधेलाल के कै लड़के-बाले हैं?

राधे०—यही सब मिलाकर ग्यारह।

राजा—और मथुरा के?

मथुरा—अजी साहब! वह दुःख की बात क्यों पूछते हैं! सिर्फ़ तीन।

राजा—सिर्फ़ तीन! हाः हाः हाः! तुम कुछ भी नहीं कर सके। बनवारी के कै हैं?

बनवारी—सात, बस।

राजा—तुम्हारा नंबर कुछ बुरा नहीं है। कुंजविहारी के शायद लड़के-बाले नहीं हैं?

कुंज०—जी नहीं। चार थे, चारो मर गए।

राजा—फिर ब्याह क्यों नहीं करते ? फिर लड़के-वाले होंगे।

कुंज०—अब कहीं इस उमर में लड़के हो सकते हैं राजा साहब ?

राजा—क्यों ! मेरे होते हैं, तुम्हारे क्यों न होंगे ?

कुंज०—आपकी बात और है। राजा साहब के कितने ही आदमी मददगार हैं। मैं ग़रीब अकेला ठहरा।

(नौकर का प्रवेश)

नौकर—राजा साहब !

राजा—क्या है रे !

नौकर—राजा साहब ! रानी जी—

राजा—क्या हुआ ?

नौकर—रानीजी—

राजा—रानीजी, रानीजी क्या कर रहा है ? समझे बनवारी, यह रानी के बारे में बड़ी ख़बर देने आया है। अरे रानीजी क्या ?

नौकर—रानीजी नहीं हैं।

राजा—क्या बक रहा है !

नौकर—जी।

राजा—कहाँ चली गईं ?

नौकर—क्या बताऊँ। इस दुनिया में नहीं हैं।

राजा—मर गईं ?

नौकर—जी हाँ ।

राजा—सच ?

नौकर—जी ।

राजा—यह तू कहता क्या है ?

नौकर—जी ।

राजा—अभी तक जीती थीं ।

नौकर—जी हाँ, जीती थीं ।

राजा—अब मर गईं ?

नौकर—जी ।

राजा—यह हो ही नहीं सकता । क्यों जी राधेलाल ?

राधे०—सो तो है ही ।

राजा—रानी कहीं मर सकती हैं ? क्योंजी कुंजबिहारी ?

कुंज०—रोज आता-जाता हूँ, रानी मर गई—ऐसा तो कभी नहीं सुना ।

राजा—मथुरा, क्या कहते हो ? इस तरह एकाएक कुछ कहे-सुने बिना—

मथुरा—हो ही नहीं सकता ।

राजा—और मर भी सकती हैं ।

मथुरा—मरने में क्या देर लगती है ?

राजा—अच्छा बनवारी, भीतर जाकर देखने ही से सब हाल अभी मालूम हो जायगा ।

बनवारी—जी हाँ, यह भी ठीक है । (सब का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—रास्ता

(भगवती अकेला)

भगवती०—राजा के family physician होने से फ़ायदा तो बड़ा भारी है ! साल में ३७॥) रुपए ! इतने से भला किसी भले आदमी का, गुज़र हो सकता है ? आज जान पड़ता है, चूल्हे पर हाँडी नहीं चढ़ेगी। किसी तरह private practice जमा नहीं पाता। शहर में जूड़ी-बुखार का नाम नहीं है। होता भी है, तो कौन उसका ख़याल करता है। कहीं डॉक्टर को न बुलाना पड़े ! कोई साला रोगी घर पर नहीं बुलाता—फ़ीस न देनी पड़ेगी ! खैराती दवा सब ढूँढ़ते हैं। देखूँ, अगर रास्ते में कोई रोगी पकड़े मिल जाय। वह एक ख़ूब हट्टा-कट्टा मोटा-ताज़ा आदमी आ रहा है। जनाब, जनाब, अजी, ओ जनाब !

(नेपथ्य में)—क्या है ?

भगवती०—ज़रा इधर आइए तो ?

(एक मोटे-ताज़े, भले-चंगे आदमी का प्रवेश)

वह—क्यों साहब ?

भगवती०—मैं कहता हूँ (खाँसता है) मैं कहता हूँ (खाँसता है) मैं कहता हूँ, आप अच्छे तो हैं ?

वह—(क्रोधित होकर) क्यों साहब, यह बात पूछने के लिये मुझे कोस-भर से न पुकारते, तो क्या कुछ आपका हर्ज था ? आप तो अच्छे आदमी देख पड़ते हैं।

भगवती०—आप नाराज क्यों होते हैं? आप शायद मुझे पहचानते नहीं हैं। एक डॉक्टर हूँ।

वह—होंगे डॉक्टर।

भगवती०—कुछ ख़याल ही नहीं करते? अच्छा, आपका हाथ देखूँ। (नाड़ी देखकर) यह क्या, आपके typhoid fever हो गया है। जबरदस्त ज्वर है। विकार है।

वह—ज्वर क्यों होने लगा जी!

भगवती०—मैं कहता हूँ, होते क्या देर लगती है?

वह—जाइए, राह छोड़िए।

भगवती०—अजी, सुन लीजिए। जानते हैं, मैं राजा साहब का family physician हूँ। जान पड़ता है, आपने Emerson's History of Lingua Capsus नहीं पढ़ी?

वह—यह कहाँ का गधा है!

भगवती०—कहते क्या हैं? आप जानते हैं, इन नसों में रानी प्रतापकुँअरि का ख़ून—

वह—जाइए। (ग़ुस्से से प्रस्थान)

भगवती०—साले ने कुछ ख़याल ही नहीं किया। ऊपर से अपमान कर गया। होने दो। अब मैं नाछोड़बंदा हूँ। वह एक औरत आ रही है। देखूँ, वह क्या कहती है। सुनो (खाँसता है) अजी! (खाँसता है)— (स्वगत) अरे कुछ समझ में नहीं आता कि क्या कहकर पुकारूँ—(प्रकट) सुनो (खँसता है) अजी—फलाने की मा! (एक स्त्री का प्रवेश)

भगवती०—बहुआइनजी !

औरत—तू कौन है पाजी, हरामजादे, गिरहकाट—

भगवती०—अरे, सुनो तो—

औरत—मर मुर्दे खूसट—कहती हूँ, राह छोड़ दे।

(प्रस्थान)

भगवती०—यह औरत तो जैसे आदमियों में रहती ही नहीं है। बात भी नहीं सुनी, और इतनी बातें सुना गई। लो, वह माधव बाबू आ रहे हैं। (माधव का प्रवेश)

भगवती०—अच्छे तो हो; कहाँ चले ?

माधव—न्यौता खाने।

भगवती०—ग़ज़ब करते हो। एक दवा पी लो, तब जाओ। आजकल ज़ोर-शोर से diarrhoea फैल रहा है।—न्यौता खाते ही diarrhoea का खटका है।

माधव—कहते क्या हो। तो क्या न्यौता खाने न जाऊँ ? लेकिन न जाने से बहुत नाराज होंगी। मौसेरी बहन हैं।

भगवती०—मौसेरी बहन हैं ? सच ? आजकल मौसेरी बहन के यहाँ न्यौता खाते ही एकदम Cholera हो जाता है; फूफेरे भाई के यहाँ न्यौता खाने जाते, तो उतना हर्ज न था।

माधव—तो फिर क्या लौट जाऊँ ?

भगवती०-लौट क्यों जाओगे ? एक दवा खाए जाओ, फिर कुछ डर नहीं है। Ben Johnson's Materia-Medica में लिखा है—

माधव—ना-ना, दवा अब न खाऊँगा। जब कॉलरा होने का खटका है, तब एकदम न्यौता न खाना ही अच्छा। लौट ही आऊँ।

भगवती०—अरे, सुनो तो।

माधव—नहीं जी! तुमने ठीक कहा। ऐसी गरमी में न्यौता खाना कुछ नहीं। (लौट जाता है)

भगवती०—कैसी छोटी तबियत का आदमी है! न्यौता खाना छोड़ देगा, मगर तो भी दवा न खायगा। सभी चाहते हैं कि डॉक्टर को कुछ न देना पड़े!—ये और कौन लोग आ रहे हैं, कुछ स्कूल के लड़के देख पड़ते हैं।

(कुछ लड़कों का प्रवेश)

पहला लड़का—हाँ, सुरेंद्रनाथ बनर्जी अभी विपिनचंद्र को बहुत दिनों तक सिखा सकते हैं।

दूसरा लड़का—रहने दो अपने सुरेंद्र बनर्जी को।

तीसरा लड़का—अरे नहीं जी, सुरेंद्र बाबू बोलते खूब हैं।

चौथा लड़का—विपिनचंद्र से बढ़कर (पाँचवें लड़के से) क्यों जी!

पाँचवाँ लड़का—(गंभीर भाव से) हाँ, विपिनचंद्र का dictation अच्छा है, और सुरेंद्र बाबू का style अच्छा है।

भगवती०—अरे ओ लड़को! इतना क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हारे घर में क्या कोई नहीं बीमार है?

लड़के—जी नहीं।

पहला लड़का—लेकिन तो भी सुरेंद्र बाबू—

भगवती०—सुनो तो, तुम्हारी बुआ के तपेदिक़ नहीं है ?—

दूसरा लड़का—No Sir !—मगर विपिनचंद्र पाल—

भगवती०—(और लड़के से) अजी, तुम्हारी मौसी को संग्रहणी हो गई थी, सो अच्छी हो गई ?

चौथा लड़का—मेरे मौसी नहीं है ?—हालाँकि सुरेंद्रनाथ बनर्जी—

भगवती०—मौसी नहीं है ? (और लड़के से) अजी, तुम्हारा नाम चंदू है—क्यों ?

तीसरा लड़का—जी नहीं, मेरा नाम मोहन है।—सो चाहे जो कहो, विपिनचंद्र पाल—

भगवती०—हाँ-हाँ, मोहन ही है। (और लड़के से) ओ लड़के ! तुम्हें Bronchitis हो गया है ?

पाँचवाँ लड़का—Bronchitis क्यों होगा ? मूर्ख, पाजी, गँवार, उल्लू—

भगवती०—अरे भाई, Bronchitis नहीं हुआ, तो न सही, गालियाँ क्यों देते हो भैया ?

लड़के—गालियाँ देंगे, ख़ूब देंगे। गालियाँ देना ही हमारा रोज़गार है।

भगवती०—गालियाँ देना ही रोज़गार है ? इसमें कुछ नफ़ा होता है ? बताओ, न हो डॉक्टरी छोड़कर यही रोज़गार शुरू कर दूँ।

पहला लड़का—हम लोग संपादक होंगे।

भगवती०—ओ! सच? तो फिर दो भैया, खूब गालियाँ दो।

दूसरा लड़का—आप लेक्चर देना जानते हैं?

भगवती०—नहीं भैया, मैं डॉक्टरी करता हूँ।

तीसरा लड़का—डॉक्टरी? फ़क़त?

भगवती०—क्यों, क्या डॉक्टरी कुछ काम की ही नहीं है?

चौथा लड़का—अखबार के लेखक भी नहीं हो?

भगवती०—ना।

पाँचवाँ लड़का—तो तुमसे देश का उद्धार न होगा। जाइए, खिसकिए। (लड़कों का प्रस्थान)

भगवती०—सालों को ज़रा कॉलरा हो। देखूँ, इनके सुरेंद्रनाथ क्या करते हैं और विपिनचंद्र ही क्या करते हैं। यहाँ अब डॉक्टरी करने से काम चलता नहीं देख पड़ता। देख पड़ता है, अब यहाँ से भी बोरिया-बसना समेटना पड़ेगा। हाय रे यमघंट-योग—

(किशोर का प्रवेश)

किशोर—अजी ओ डॉक्टर साहब, आपसे कुछ ख़ास मतलब है।

भगवती०—क्यों? क्या रानी की किसी सखी को दो-तीन छींकें आई हैं, इसी से उसे दवा देनी होगी? तुम भैया, और डॉक्टर देखो। मुझसे अब नहीं सपरेगा।

किशोर—नहीं जी डॉक्टर साहब, एक बड़े मजे की बात है। आपको एक काम करना पड़ेगा, सुनिए।

(कान में कुछ कहता है)

भगवती०—यह कैसा मजा है भैया ? जीते आदमी को मैं कैसे मार डालूँगा ?

किशोर—आप भी बस वही हैं ! मैं यह थोड़े कहता हूँ कि आप सचमुच रानी को मार डालिए। सिर्फ इतना कहना पड़ेगा कि रानी मर गई हैं।

भगवती०—ओ ! तो शायद तुमने Medical Jurisprudence नहीं पढ़ा ? False death certificate देकर क्या मैं अखीर को जेल जाऊँगा ?

किशोर—जेल क्यों जाइएगा ?

भगवती०—अगर जाना ही पड़े, तो ?

किशोर—मैं इसका जिम्मा लेता हूँ।

भगवती०—कैसे ?

किशोर—मैं कहता हूँ, आप जेल न जाइएगा। अगर जाइएगा, तो कहिएगा कि "हाँ"।

भगवती०—तब "हाँ" कहकर मैं क्या कर लूँगा ?

किशोर—अरे भाई, जेल कैसे जाओगे ?

भगवती०—ना भैया, यह कुछ मेरी समझ में नहीं आता।

किशोर—डॉक्टर साहब, आप घबराते क्यों हैं ? यह तो सिर्फ एक दिल्लगी है।

भगवती०—तुम लोगों के लिये दिल्लगी होगी, लेकिन मुझे तो जेल जाने के सामान जुटाना दिल्लगी नहीं जान पड़ता।

किशोर—अजी, खाली दिल्लगी नहीं है। यह काम अगर आप कर सकेंगे, तो आपको १००) रु० इनाम मिलेगा—समझे ?

भगवती०—तुम भी अच्छे आदमी हो। पहले ही से कह देते, अब तक मैं समझ गया होता—अब सब मेरी समझ में आ गया। भैया, बातचीत यहीं से शुरू करना ठीक होता है।—मगर पेशगी मिलेगा न !

किशोर—लीजिए—अभी ले लीजिए। (नोट देता है)

भगवती०—वाह ! अब तो समझ एकदम झक हो गई। जान पड़ता है, मैं Newton या Bismark या Gladston का दूसरा अवतार हूँ। अच्छा हाँ, क्या कहना होगा ? यही न कि रानी मर गई हैं ! यह कौन बड़ी बात है ? उस दिन अभी बीस रुपयों के जोर से रानी के गर्भ साबित कर दिया था, तो क्या आज सौ रुपयों के जोर से रानी को मार न डाल सकूँगा ? मगर रानी के शरीर में मौत के सब लक्षण देख पड़ेंगे न ?

किशोर—सब लक्षण देख पड़ेंगे।

भगवती०—और जी उठने के पहले उसकी खबर मुझे मिल जायगी जरूर ?

किशोर—हाँ।

भगवती०—अच्छा, तो तथास्तु। भैया, हम डॉक्टर हैं। रोगी को बचा सकें या न बचा सकें, लेकिन जीते हुए आदमी को मार डालने में कभी नहीं चूक सकते। भैया, यह डॉक्टरी

अद्भुत विद्या है! जान पड़ता है, तुमने Napoleon's Vivisectian of Living & Dead Organisation नहीं पढ़ा! बड़ी विचित्र पुस्तक है! बड़ी विचित्र पुस्तक है! जरूर पढ़ो।

(दोनों का विपरीत ओर से प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—रानी के सोने का कमरा

(रानी और रानी की सखियाँ)

रानी—तो फिर सब ठीक है?

जानकी—सब ठीक है।

रानी—तो अब मैं मरूँ?

जानकी—हाँ, मरो।

रानी—राजा आ रहे हैं?

श्यामा—हाँ, उनके पास तुम्हारे मरने की खबर गई है।

रानी—तो फिर मरती हूँ!

सब—मरो।

रानी—सुंदर!

सुंदर—क्या?

रानी—मैं मर गई।

सुंदर—तुम्हारा मरना ही अच्छा।

रानी—सलोनी, रोओ तो।

सलोनी—ठहर जाओ, ये पूरियाँ खा लूँ। (खाती है)

रानी—श्यामा !

श्यामा—क्या ?

रानी—राजा से कहना कि मैं मर गई ।

श्यामा—अगर पूछें—किस तरह ?

रानी—कहना, साँस अटक गई थी ।

श्यामा—बेशक, यह नए ढंग का मरना है ।

रानी—अब मैं सिर से चादर ओढ़ती हूँ । वह राजा आ रहे हैं, तुम सब खूब चिल्ला-चिल्लाकर रोओ ।

(सब तरह-तरह से चीखकर रोती हैं)

जानकी—हो राजा ! (राजा का प्रवेश)

सुंदर—हाय राजा !

श्यामा—अरे राजा !

राजा—क्या रानी मर गईं ?

जानकी—मर गईं ।

राजा—कैसे मरीं ?

सुंदर—साँस अटक गई ।

राजा—कब ?

सलोनी—अभी थोड़ी ही देर हुई ।

राजा—डॉक्टर आया था ?

श्यामा—उन्हें बुलाने आदमी भेजा गया; इसी बीच में रानी की आँखें ऊपर चढ़ गईं ।

राजा—हूँ ।

जानकी—ऐसी मौत किसी ने देखी न होगी। दम-भर में सब खतम हो गया!

सलोनी—ऐसी मौत किसकी होगी। सोने की चिड़िया उड़ गई!

सुंदर—ऐसी मौत किसकी होती है। राजा साहब, हाथ-पैर सब ठंडे पड़े हैं!

श्यामा—मुँह से बोल भी नहीं निकलता—ऐसी मौत सबकी हो। (भगवती का प्रवेश)

राजा—लो, डॉक्टर साहब तो आ गए। देखिए तो, रानी मरी हैं कि नहीं?

भगवती०—(हाथ-पैर उठाकर, नाक-कान टटोलकर) बेशक मर ही गईं। एकदम जान नहीं है! (सखियों से) कब मरीं?

जानकी—अभी-अभी।

भगवती०—क्या हुआ था?

सुंदर—साँस अटक गई थी।

भगवती०—ठीक है। रघुवंश में लोलिंबराज ने लिखा है कि राजा युधिष्ठिर की स्त्री सूपनखा की ऐसी ही मौत हुई थी।

राजा—अच्छा, चलिए। रानी के क्रिया-कर्म का इंतजाम किया जाय।

भगवती०—चलिए। मगर रानी को जलाइएगा नहीं, बहा दीजिएगा। इस रोग में मरनेवाले को बहा देना ही चाहिए।

(दोनों का प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—भगवती का बैठकख़ाना

(श्यामलाल, भगवानदास, गंगाधर और मोहनलाल शराब की बोतलें लिए पीते और नाचते-गाते हैं)

[रसिया—सारंग]

सब—खा लो पी लो जी-भर यारो, ज्वानी सारी बीती जाय।

श्याम०—किसको कब ताऊन दबोचे या हैज़ा हो जाय।
क्या जाने, कब इस पिंजड़े से यह चिड़िया उड़ जाय।
खा लो० ॥

भगवान०—नाचो-नाचो—

गंगा०—ढालो-ढालो—

मोहन०—*हः हः हः ! खा डाल।*

श्याम०—जैसे बातें बात आन दे—

भगवान०—गाता है बेताल ॥ खा लो० ॥

गंगा०—मरने पर जो होगा, होगा; क्या चिंता है यार।

मोहन०—तोंद फुलाकर, चैन झुलाकर, चल तो चौक बजार ॥
खा लो० ॥

श्याम०—स्वामी-सेवक सब समान हैं, करके देख विचार।

गंगा०—हँसी-ख़ुशी से मौज मना ले, भज ले पंच-मकार !
खा लो० ॥

मोहन०—कौन लोमड़ी-सा है बैठा ?

श्याम०—अबे, भाग रे भाग !

भगवान०—कौन उड़ाता धूल अरे तू जाता है? खा साग!
खा लो० ॥

गंगा०—अहा हा हा!

मोहन०—ओहो हो हो!

श्याम०—ही ही ही!

भगवान०—चुपचाप!

गंगा०—बड़ा मज़ा! बलिहारी!

मोहन०—अपनी ज़रा चुटैया नाप ॥ खा लो० ॥

भगवान०—वाह-वाह!

गंगाधर—Bravo!

मोहन०—Excellent!

श्याम०—तुम लोग आप ही गाना गाते हो, और आप ही मगन होते हो।

भगवान०—अच्छा, तो एक बात कहूँ?—कहूँ? कहूँ? कहूँ?

गंगाधर—नहीं भाई, अब कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।

भगवान०—क्यों न कहूँगा? दो सौ दफ़े कहूँगा। पाँच सौ दफ़े कहूँगा।

मोहन०—कभी नहीं। यह बात कभी नहीं होगी।

भगवान०—अलबत्ता कहूँगा। ज़रूर कहूँगा।

मोहन०—चुप रहो साले।

भगवान०—तुमने मुझे साला क्यों कहा ? तुमको साला कहने का मजाज़ क्या है ?

श्याम०—यह मोहन ने बेजा किया।

भगवान०—बेशक बेजा किया—बहुत ही बेजा किया।

गंगाधर—झगड़ा क्यों करते हो भाई ? (गाता है)

खा लो पी लो जी-भर यारो,
जवानी यों ही बीती जाय।

भगवान०—मगर इन्होंने साला क्यों कहा ?

मोहन०—अरे भाई, जाने दो। जबान से निकल गया भैया, खफ़ा क्यों होते हो ? यह लो, कान पकड़ता हूँ।

(अपने कान पकड़ता है)

भगवान०—तुम और चाहे जो कहो, साला क्यों कहा ?

(गाते-गाते भगवती का प्रवेश)

[ग़ज़ल—क़व्वाली]

ऐ दिल, मज़ा अगर तू कुछ चाहे ज़िंदगी का—
तो कर ले यार मेरे, अख़्त्यार यह तरीक़ा।
बस खोल 'काग' झट से पी जा उँडेल झट से,
ह्विस्की हो या बरांडी, आशिक़ हो इस परी का।

गंगाधर—लो, भगवती भी आ गए। भगवती के बिना महफ़िल ही नहीं जमती—मज़ा ही नहीं आता !

भगवान०—मेरे बाप को गाली दे लेते—मगर साला क्यों कहा ?

(भगवती गाता है)

[ग़ज़ल—क़व्वाली]

ऐ दिल, मज़ा अगर तू कुछ चाहे ज़िंदगी का,
तो कर ले यार मेरे, अख़्त्यार यह तरीक़ा।
बस खोल 'काग' झट से, पी जा उँडेल झट से,
ह्विस्की हो या बरांडी, आशिक़ हो इस परी का।
मरुभूमि इस जगत में मीठा कुआँ है मदिरा;
इसके बिना, समझ लो, सब सुख है यार, फीका।
दुनिया के झँझटों के तूफ़ान से बचोगे ;
पी लो ज़रा एक कुल्ली, सब दुख मिटेगा जी का।
है जी मज़ा 'बनारस', बोतल है रेलगाड़ी;
दे दो 'चेयर्स हुरे'! एंजिन चले ख़ुशी का।
बदली का दिन है जीवन, जोरू है घोर काली;
है अंधकार में यह रोशन चिराग़ घी का।
संकोच-शोक-लज्जा उड़ जायगी हृदय से ;
भट्टी में जाने की है यह राह—यह तरीक़ा।
संताप-शोक में जो आनंद चाहते हो ,
तो तुम पियो बरांडी धर ध्यान उर्वशी का।

मोहन०—मगर यह 'निरामिष' कब तक चलेगा ? क़लिया-क़बाब, भेजा-गुर्दा, मछली-चाप वग़ैरह मँगाओ न ?

भगवती०—सब्र करो दादा। तुमने सुना नहीं कि सब्र में मेवा फलता है।

भगवान०—मगर तुमने मुझे साला क्यों कहा ?

गंगाधर—अच्छा, गोपालसिंह कहाँ हैं ? अभी तक नहीं आए।

भगवती०—अरे आते हैं, आते हैं ; इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हो भाई ?

श्याम०—मगर भाई, गोपाल अपने बाप का अच्छा सपूत है। जैसे सुना कि उसके बाप ने एक बहुत ही ख़ूबसूरत औरत टाँच मँगाई है, वैसे ही आप भी उस पर लट्टू हो गया। कहता था, आज किसी तरह उस औरत को यहाँ भी ले आवेगा।

गंगाधर—इसी को कहते हैं—"बाप का बेटा, सिपाही का घोड़ा ; बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा।"

(मोती और अन्य चार स्त्रियों के साथ गोपालसिंह का प्रवेश)

श्याम०—वह लो, छोटे राजा आ गए।

मोहन०—और अकेले नहीं आए, साथ में पाँच-पाँच रानी हैं।

गंगाधर—छोटे राजा वह कौन है, जिसका तुम ज़िक्र करते थे ? वही है न, जो बानरसी साड़ी डाँटे हुए है ?

भगवती०—वाह-वाह ! तुममें इतनी भी समझ नहीं कि देखकर पहचान लो ? सुना नहीं—एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि। (मोती के पास जाकर लिपट जाना चाहता है, और वह धक्का दे देती है) क्यों, क्या मैं पसंद नहीं आया ! देखो, ऊपर से मैं उतना चटकीला-चमकीला नहीं हूँ—मगर भीतर से बड़े ऊँचे दर्जे का आदमी हूँ ! शेक्सपियर—

श्यामलाल—(भगवती को ढकेलकर) रहने दो शेक्सपियर। करते क्या हो ? उन्हें दिक़ क्यों करते हो ? तुम तो बड़े ढीठ देख पड़ते हो।

भगवती०—मगर तुम भी तो बड़े शरमीले नहीं देख पड़ते।

श्याम०—(मोती से) अजी ओ-ओ, माई डियर।

गंगाधर—(श्यामलाल को हटाकर) चुप रहो सुअर। करते क्या हो ? क्यों हैरान करते हो ? (मोती से) अजी ओ-ओ, माई डार्लिंग।

मोहन०—हटो जी हटो (गंगाधर को धक्का देकर), क्या पाजीपना करते हो। (मोती से) आओ रानी, तुम मेरे पास आओ। कोई तुमसे नहीं बोल सकता।

भगवती०—यह हो ही नहीं सकता।

भगवान०—(चिल्लाकर सबके ऊपर गिर पड़ता है) अरे बाप रे ! मार डाला ! मार डाला !

सब—क्या है जी ! क्या हुआ—क्या हुआ ?

भगवान०—होगा और क्या ? अपने लिये जगह कर ली। Oh my derry derry darlıug ! (मोती को पकड़ता है)

गोपाल—अरे-अरे, यह करते क्या हो ? इसे छोड़ दो—कहता हूँ ! तुम लोग इन चारो में से चाहे जिसे पसंद कर लो। यह मेरी चीज़ है।

भगवान०—तुम्हारी है, या तुम्हारे बाप की ?

गोपाल—बाप की चीज़ मेरी ही चीज़ है।

गंगाधर—वाह-वाह, कैसी logic है।

मोहन०—अरे, झगड़ा क्यों करते हो? बारी-बारी से मामला ठीक कर लो न।

श्याम०—हाँ, मैं भी तो वही कहता हूँ। द्रौपदी के नहीं पाँच पति थे।

भगवती०—तुमने लाख बात की एक बात कह दी। रामायण की बात पर किसी को एतराज़ नहीं हो सकता। झगड़ा क्यों करते हो? इन्हें नाचने दो, गाने दो। ज़रा मज़ा होने दो। (मोती से)—

पुतरी मतिन रखब तोहैं पलकन की आड़ माँ;
तोहरे बंदे हम आँखी माँ बैठक बनाइला।

गोपाल—हाँ, बल्कि यह अच्छा है। गाओ तो मोती, एक गाना गाओ!

मोती—मैं तो गाना नहीं जानती।

गोपाल—फिर वही पाजीपन शुरू किया! गाओ।

मोती—मेरी आवाज़ पड़ गई है। मुझसे गाया न जायगा।

भगवती—अच्छा, तुमसे न गाया जायगा, तो न सही, कुछ परवा नहीं। तुम्हारी ये साथिनें गावें। तुम इनके साथ नाचोगी तो? तुम्हारी आवाज़ पड़ गई है, पैर तो नहीं टूट गए? (और औरतों से) गाओ जी गाओ।

(चारो वेश्याओं का नाचना और गाना)

[ख़याल—बिहाग]

आँख खोलकर यार दूर से देखो हमको, भला यही ;
पछताओगे पास बहुत जो आओगे; हम कहें सही।
हिलती-डुलती फन फैलाती काली नागिन हैं सब हम ;
जो बदक़िस्मत हमसे लिपटे, उसको मारें कम से कम।
मरे हज़ारों और तड़पते पड़े हज़ारों घायल हैं ;
और हज़ारों चटक-चुटीली सैनों ही के क़ायल हैं।
अगर राह में मिलो, हमारी परछाहीं मत पड़ने दो ;
सीधी रक्खो निगाह, न आँखें इन आँखों से लड़ने दो।
हम हैं लैंप केरोसिन का, ख़ुद जलें जलावें औरों को ;
भला चहो, तो हाथ न डालो, जान हमारे तौरों को।
कल न पड़ेगी कभी क़लक से हुए अलक से जो सौदा ;
'हाय-हाय' दिन-रात करोगे, अगर अलग कसी पैदा।
हम हैं दरिया हुस्न-हँसी का, देखो दूर किनारे पर ;
फाँदे, तो बस डूब गए तुम, है ऐसा ही यह चक्कर।

(क्रमशः सब लोग उनके साथ नाचते-गाते हैं। इसी समय राजा का मुसाहबों के साथ प्रवेश)

भगवती०—अरे-अरे, राजा साहब, राजा साहब !

(छिप जाता है)

श्याम०—यह बेवक़्त कैसे देख पड़े ?

भगवान०—बड़े ही बेवक़ूफ़ हैं! आकर मज़ा किरकिरा कर दिया।

मोहन०—भैरवी में आकर कड़ी मध्यम लगा दी!

गंगाधर—अजी, देखते क्या हो? इसी को कहते हैं—"चोर के घर छिछोर पैठा।"

राजा—(गोपाल से) क्यों रे पाजी लड़के!

गोपाल—(झीककर) क्या हुआ?

राजा—तेरी ये कैसी हरकतें हैं? पाजी, अहमक़, बेहया, बद्चलन!

गोपाल—और आप क्या बड़े नेकचलन हैं?

राजा—सुअर, तुझे कुछ भी तमीज़ नहीं है? नालायक़, हरामख़ोर, टुकाची!

गोपाल—बस, हो चुका। कहता हूँ, गालियाँ न दो।

राजा—सुअर, गधा, नमकहराम!

गोपाल—कहता हूँ, चुप रहो, नहीं तो अच्छा न होगा।

राजा—तेरी इतनी मजाल! मैं तेरा बाप हूँ—इसका तुझे कुछ ख़याल ही नहीं है?

गोपाल—वाह रे बाप!—ऐसे बाप बहुत-से देखे हैं।

राजा—बहुत-से क्या देखे हैं रे?—इसे छोड़ दे।

(मोती का हाथ पकड़ता है)

गोपाल—छोड़ क्यों न दूँगा।

(मोती को पकड़कर अपनी ओर खींचता है)

भगवती०—अब सुंद-उपसुंद का युद्ध शुरू हो गया। इस समय Kalidas' Medical Jurisprudence के अनुसार नौ-दो-ग्यारह हो जाना ही मुनासिब है।

(मोती को पकड़कर दोनों घसीटते हैं। और लोग भी उसमें शामिल हो जाते हैं। खूब चिल्लाहट और उछल-कूद होती है।)

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—राजा की बैठक

(राजा और मुसाहब लोग)

राजा—सब साले पाजी हैं।

मुसाहब—जी हाँ, यह तो ठीक ही है।

राजा—मैं बुढ़ापे में ब्याह करता हूँ, तो उसमें तुम्हारा क्या है सालो ?

मुसाहब—और क्या, तुम्हारा क्या है सालो ?

राजा—इन सालों को पकड़कर क्या करना चाहिए, जानते हो राधेलाल ?

राधे०—जुतियाना चाहिए।

राजा—अरे भाई, जुतियाना ऐसी कौन नई बात है ?

मथुरा—हाँ, ऐसी कौन नई बात है ?

कुंज०—ख़ैर, पुरानी होने पर भी दो-चार जूते लगा देना बुरा न होगा।

राजा—ना, ऐसे लोगों को पकड़कर क्या करना चाहिए, जानते हो मथुरा ?

मथुरा—(सोचकर) उन पर शिकारी कुत्ते छोड़ देना क्या ठीक न होगा ?

राजा—अरे दुत।

मुसाहब—(साथ-ही-साथ) अरे दुत।

राजा—देखो, ये सब साले बहुत बढ़-बढ़कर बातें करने लगे हैं। कोई-कोई मुझे देखकर मुँह पर ही गालियाँ देने लगता है। कोई आवाजें कसता है, कोई हँसता है। सब साले पाजी हैं !

मुसाहब—सब साले पाजी हैं !

राजा—जो हो, लड़की मिल गई है। क्यों जी बनवारी, इस लड़की के साथ हालाँकि कुँअर गोपाल का व्याह ठीक हो गया था—तेल तक चढ़ गया है, मगर फिर भी मेरे साथ व्याह हो सकता है। ऐसे व्याह तो बहुत हो चुके हैं—क्यों जी ?

बनवारी—जी हाँ, इसमें शक ही क्या है !

कुंज०—मगर कुँअर साहब आपके लिये लड़की छोड़ देने को राजी हैं ?

राजा—नहीं तो क्या बाप से झगड़ा करेगा। गोपाल मेरा वैसा लड़का नहीं है। क्यों जी राधेलाल ?

राधेलाल—कुँअरजी बड़े ही सपूत हैं।

राजा—अब की ऐसी लड़की मिली है मथुरा, कि वाह-वाह !

मथुरा—वाह-वाह ! ओहो-हो-हो !

राजा—उसका चेहरा, समझे राधेलाल ?

राधे०—आहा-हा-हा !

राजा—ख़ैर, चेहरा उतना फैंसी न होने पर भी उसका रंग, समझे कुंजविहारी ?

कुंज—ऊहू-हू-हू !

राजा—और रंग उतना साफ़ न होने पर भी—

बनवारी—चिकनापन है।

राजा—हाँ जी हाँ। सब अंग सुंदर नहीं हैं, तो न सही—

कुंज—सब अंग हैं तो।

राजा—जल्दी से एक नई औरत चाहिए। मैं कैसी औरत चाहता हूँ, सो शायद तुम लोग नहीं जानते ?

मुसाहब—जी नहीं।

राजा—अच्छा, सुनो। (गाता है—)

चाहूँ ऐसी मन की नार, प्यारी न्यारी छल-बलवाली।
लंबी हो या नाटी नार, दुबली हो या हो तैयार,
भोलीभाली या ऐयार, गोरी-गोरी या हो काली ॥ चाहूँ० ॥
भौं लाठी हों या कि कमान, सीपी या कि सूप हों कान,
नैन कटारी या हों बान, पेट कटोरी हो या थाली ॥ चाहूँ० ॥
बाल नाग या रेशम-लच्छे, कुछ रही हों या हों अच्छे,
आशिक को रच्छे या भच्छे, सलहज हो या छोटी साली ॥ चाहूँ० ॥
बात-बात में बिगड़-बिगड़कर, जाय मायके चाहे लड़कर,
पैरों पकड़कर नाक रगड़कर, कर लूँगा ख़ुश मैं टकसाली ॥ चाहूँ० ॥
ख़ूब प्यार से कहे यहाँ तक मुर्दे मर्द। अरे ओ अहमक,
[सा०—सोना और सुगंध विनाशक होगी उसके मुँह की गाली ॥ चाहूँ० ॥

राजा—देखो, इस गात के ऊपर भाष्य करने की ज़रूरत है; नहीं तो मेरा मतलब तुम्हारी समझ में नहीं आवेगा।

मुसाहब—हाँ-हाँ, सो तो है ही।

राजा—सुनो, चाहे उसकी आँखें नील कमल-ऐसी हों और चाहे बिल्ली की-ऐसी करंजी हों, चाहे उसके ओठ कुँदरू-ऐसे हों और चाहे हबशियों के-ऐसे हों, चाहे उसके दाँत मोती के दाने हों और चाहे हाथी के-ऐसे बड़े-बड़े बाहर निकले हों, चाहे उसकी नाक बाँसुरी-ऐसी हो और चाहे चीनियों की-ऐसी चिपटी हो, चाहे उसकी चाल हथिनी की-ऐसी हो और चाहे मेंढक की-ऐसी हो, कोई हर्ज नहीं है। बस, बहस कम करे, रोवे नहीं, रसोई अच्छी पकावे; कपड़े कम फाड़े, बरतन कम फोड़े, गहनों की फरमाइश कम करे, थोड़ा सोवे, थोड़ा खाय और उस पर प्यार से मुझे कहे—अरे, ओ कलमुहे मरदुए!

मुसाहब—वाह-वाह! तो क्या कहना है! फिर तो सोने में सोहागा होगा। (गोपालसिंह का प्रवेश)

राजा—आओ बेटा गोपाल। कब आए?

गोपाल—नहीं जी, यह तो हो ही नहीं सकता।

राजा—एँ-एँ—क्या नहीं हो सकता भैया?

गोपाल—मेरे साथ उसके ब्याह का सब ठीक-ठाक हो गया है। मुझे बहाना करके बाहर भेज दिया, और धोखा देकर आप उससे ब्याह करना चाहते हैं।

राजा—बेटा, तुम्हारे लिये ब्याह की क्या चिंता है ? अभी और लड़की खोजे देता हूँ। क्यों जी मथुरा ?

मथुरा—यह कौन बड़ी बात है। अभी।

गोपाल—आप अपने ही लिये और लड़की न खोज लीजिए।

राजा—यह भी कहीं हो सकता है ? क्यों जी राधेलाल ?

राधे०—हाँ, यह कैसे हो सकता है ?

गोपाल—मैं यह कुछ नहीं जानता। मेरा ब्याह उससे ठीक हो चुका है। मैं उससे जरूर ब्याह करूँगा।

राजा—गोपाल, तुम पागल हो गए हो क्या ?—क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—हाँ साहब, ये पागलपन के ही लक्षण तो देख पड़ते हैं।

गोपाल—मैं पागल हो गया हूँ, या आप पागल हो गए हैं ?

राजा—यह क्या कह रहा है मथुरा ?

(मथुरा विस्मय का भाव दिखाता है)

गोपाल—खैर, वह चाहे जो हो, आप इस लड़की से ब्याह न करने पावेंगे। चाहे इसके लिये जान जाय और चाहे जान रहे।

राजा—भैया, तुममें तो पितृभक्ति का बहुत ही अभाव देख पड़ता है। क्यों राधेलाल ?

राधेलाल—बहुत ही अभाव है।

गोपाल—और आपमें पुत्र का स्नेह बहुत प्रबल देख पड़ता

है ! मेरा तेल तक चढ़ गया है। और, आप उसी लड़की से शादी करने को तैयार हैं ! अच्छे बेहया बाप हैं आप !

राजा—देखो गोपाल, कहे देता हूँ, यह झगड़ा मत करो। नहीं तो मैं तुमको त्याज्य-पुत्र कर दूँगा। क्यों जी मथुरा ?

मथुरा—इसके सिवा और उपाय ही क्या है ?

गोपाल—त्याज्य-पुत्र कर दीजिएगा ! मैं भी आपको त्याज्य-पिता कर दूँगा।

राजा—त्याज्य-पिता भी कहीं होता है मूर्ख ? क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—हाँ, सो आज तक तो कभी यह बात सुनी नहीं।

गोपाल—हो या न हो, आप यह ब्याह न कर सकेंगे—सीधी बात है।

राजा—तुम जानते हो—मैं तुम्हारा बाप हूँ !

गोपाल—वाह रे बाप ! ऐसा बाप होने से तो धरती फोड़कर पैदा होना हजार गुना अच्छा।

राजा—क्यों, यह बाप क्या तुमको पसंद नहीं है ? हाँ ! कुंजविहारी !

कुंज०—हाँ छोटे राजा, इससे अच्छा बाप कहाँ पाओगे ? अच्छे-भले बाप तो हैं।

राजा—देखो गोपाल, निकल जाओ !—क्यों जी मथुरा ?

मथुरा—सो ऐसी अवस्था में इनका निकल जाना ही ठीक जान पड़ता है।

गोपाल—निकल क्यों न जाऊँगा ! आप खुद निकल जाइए।

राजा—अच्छा, तो फिर ले पाजी ! (प्रहार)

गोपाल—हाँ, तो यही सही ! (प्रहार)

(पिता और पुत्र की मार-पीट, मुसाहबों का भय-व्याकुल दृष्टि से देखना)

राजा—अरे बाप रे ! ओ मथुरा—ओ बनवारी—ओः !

गोपाल—बाप है या शैतान ! नकोटे न मारो—कहता हूँ—ओः ! (किशोर का प्रवेश)

किशोर—यह क्या ! यह क्या ! (छुड़ा देता है)

राजा—देखो तो, देखो तो, मार के पीस डाला !

गोपाल—और तुमने तो बड़ी रियायत की है न ! देह-भर में नकोटे लिए हैं !

किशोर—छिः ! लोग देखकर क्या कहेंगे ?

गोपाल—कहेंगे और क्या ? कहेंगे, ऐसे बाप के मुँह में आग लगा देनी चाहिए ।

राजा—मरने के पहले ही ?

किशोर—झगड़ा किस बात पर है ?

राजा—यह मुझे ब्याह नहीं करने देता ।

गोपाल—क्यों करने दूँ ? आप और जगह दूसरी लड़की तलाश कर लीजिए ।

राजा—अच्छा, किशोर, तू ही इस झगड़े का फैसला कर दे ।

गोपाल—हाँ, तू ही बेटा, इस झगड़े का फैसला कर दे ।

किशोर—यह तो आप लोगों ने बड़ा झंझट खड़ा कर रक्खा है। अब आपने क्या करना ठीक किया है।

गोपाल—इसी का तो झगड़ा है।

राजा—इसी का तो फ़ैसला नहीं होता।

किशोर—अच्छा, मैं फ़ैसला किए देता हूँ। (जाकर कुर्सी पर बैठता है) शायद आप दोनो साहब यह समझ सकते हैं कि इस लड़की के साथ आप दोनो साहबों का ब्याह नहीं हो सकता?

दोनो—हाँ, सो तो देख ही पड़ता है।

किशोर—अगर एक के साथ ब्याह हो जायगा, तो उस पर दूसरे का कोई दावा नहीं रहेगा।

दोनो—सो तो है ही।

किशोर—और यह भी ग़ैरमुमकिन है कि द्रौपदी के बारे में पांडवों ने जैसा समझौता कर लिया था, वैसा हो सके।

दोनो—नहीं। वैसा कहीं हो सकता है?

किशोर—अच्छा, तो मेरा फ़ैसला यही है कि "जिसकी लाठी, उसकी भैंस।" (प्रस्थान)

राजा—क्या कहते हो बेटा?

गोपाल—आप क्या कहते हैं?

राजा—मैं यह ब्याह ज़रूर करूँगा।

गोपाल—मगर मैं यह ब्याह कभी न करने दूँगा।

राजा—अच्छा, देखो, करता हूँ कि नहीं।

गोपाल—अच्छा, देखता हूँ, आप कैसे करते हैं। (प्रस्थान)

राजा—छोकरे का इरादा अच्छा नहीं जान पड़ता। कुछ गड़बड़ जरूर करेगा। लेकिन मैं इस लड़की को छोड़ नहीं सकता। राम का नाम लेकर काम शुरू करता हूँ। देखूँ, अंत तक क्या होता है। (नौकर का प्रवेश)

नौकर—राजा साहब !

राजा—क्यों, काँप क्यों रहा है ?

नौकर—हमारी रानीजी—

राजा—रानी ? क्या हुआ ? वह तो मर गई है।

नौकर—जी नहीं। रानी फिर जी उठी हैं। जी उठकर घर में बैठी पूरी-तरकारी खा रही हैं।

मुसाहब लोग—(डरकर) राम राम राम राम राम !

राजा—अरे, तू यह क्या कह रहा है !

नौकर—जी !

राजा—अबे, 'जी' क्या ? मरा आदमी कहीं जी सकता है ? क्यों जी कुंजविहारी ?

कुंज०—हाँ, मौत के आने की खबर सुनकर मरी औरतों को जी उठते देखा-सुना गया है।

राजा—ऐसा भी कहीं हो सकता है मथुरा ?

मथुरा—जी हाँ, यह कैसे होगा।

राजा—मैं इस समय ब्याह करने को तैयार हूँ—ऐसे बेवक्त,—

बनवारी—(नौकर से) क्यों रे, तुम्हारी रानी को जी उठने के लिये और समय नहीं था क्या ?

नौकर—तो मैं क्या करूँ। हम लोगों ने तो बहुत कुछ मना किया, मगर उन्होंने सुना ही नहीं। तड़ से जीकर उठ बैठीं, और पूरियाँ उड़ाने लगीं।

कुंज०—किसके हुक्म से वह जी उठीं? और अगर जीना ही था, तो इस तरह एकाएक कुछ खबर दिए विना क्यों जी उठीं?

राजा—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। डॉक्टर तक कह गया कि वह मर गई।—इन सबने इसके लिये यह सब कुचक्र रचा है, जिसमें मैं ब्याह न करूँ। जा, मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। मैं ब्याह करने जाता हूँ। देखूँ, कौन मुझे रोकता है।

(गुस्से के साथ राजा का प्रस्थान। पीछे-पीछे मुसाहब भी जाते हैं)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजा के महल का बाग़

(किशोर अकेला)

किशोर—क्या कहूँ, कैसा सुंदर चेहरा है! कैसा रंग है! जैसे Potasium ferro cyanide है। कैसे गुलाबी गाल हैं! देह क्या, जैसे अंगूर की बेल है। हाय कहाँ है? वह कहाँ है? हे लता! पता बता दे, मेरी प्राणेश्वरी कहाँ है। हे झाड़ी! तूने क्या मेरी प्रियतमा को छिपा रक्खा है? अगर छिपा रक्खा हो, तो दिखा दे। हे दीवार! मेरी प्राणेश्वरी को बुला

दे, नहीं मैं सिर फोड़ डालूँगा—आह—ओह—(नेपथ्य में गाने की आवाज़ सुन पड़ती है) लो, वह आ रही है। हृदय! धीरज धर।

(गाते-गाते चमेली का प्रवेश)

[ठुमरी]

ये हिये की बिथा को मिटाय सके, बिन वाही सलोने साँवरिया ;
छियो आपने हाथ सों वाको हियो; कियो मोहिं तो बालम बावरिया।
रह्यो घेरिकै घोर अँधेरो हियो, तिहि दूर करै को बिना पिय के।
अपने हिय सों हिय मेरो सखी, वह घेरि रह्यो भरि भाँवरिया।
अब माधुरी नाहिं रही मधुरे अधरान, मिट्यो रस-रंग सबै ;
परी पाँयन लोटै अनादर सों वह शारद चंद की चाँदनियाँ।
छिपे चंद्रमा तारा सबै घन में, अब दुर्दिन की है बुरी ये घरी ;
हँसै जैसे अकास प्रकास के पुंज को, व्याकुल कै कुल-कामिनियाँ।

किशोर—अब मैं क्या करूँ ? मैं भी टहल-टहलकर एक Soliloquy करूँ—

उठा के नाज़ से दामन भला किधर को चले ;
इधर तो देखिए, बहरे-खुदा किधर को चले।
अभी तो आए हो, जल्दी कहाँ है जाने की ;
उठो न पहलू से, ठहरो ज़रा, किधर को चले ;

चमेली—अब तो तोता ठीक-ठीक पढ़ रहा है।

किशोर—आह !—

शक्ल दो दिन से जो तुमने हमको दिखलाई नहीं ;
कल से बेकल हैं, हमें कल आज तक आई नहीं।

इस दिले-वहशी से तुम जो भागते हो दूर-दूर ;
अपना दीवाना इसे समझो, ये सौदाई नहीं।

चमेली—अब तो तोता खूब पढ़ रहा है। पढ़ो बेटा गंगाराम, पढ़ो ! पढ़ो !

किशोर—ओह !—

नहीं मुमकिन कि इस बख़्तो-दुनी से कामे-जाँ निकले ;
बदन से जान दिल से आरज़ू निकले, तो हाँ निकले।
जला हूँ आतिशे-फ़ुर्क़त से ऐसा शोलारूयों की,
जो आहे-सर्द भी खींचूँ, तो सीने से धुआँ निकले।

चमेली—अब छिपाना ठीक नहीं। (आगे बढ़कर) ओः ! आप यहाँ हैं ! (लौट जाना चाहती है)

किशोर—ओः ! आप हैं ? माफ़ कीजिएगा। (दूसरी ओर से जाना चाहता है)

चमेली—बात भूली जाती हूँ। (लौट आती है) दीदी के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाकर ले जाना होगा, नहीं वह ख़फ़ा हो जायँगी। (फूल चुनती है)

किशोर—वाह, भूला जाता हूँ। (लौटकर) Botany समाप्त किए बिना जाना ठीक नहीं।

चमेली—वाह, कैसा सुंदर गुलाब है !

किशोर—यह Convolvuius grandiflorus है।

चमेली—इसकी पँखड़ियाँ झड़ गई हैं। फिर भी कैसा सुंदर है। आहा—गुलाब में अगर काँटे न होते—

किशोर—Wal'-flower, Flora. actinomorphic, cruciform, Calyx. Polysepalous, Corola, Polypetalous—

चमेली—बस, फूल चुन चुकी।

किशोर—हूँ मैं भी सबक़ याद कर चुका।

चमेली—अब चलूँ। (जाना चाहती है)

किशोर--अब चलना चाहिए। (दूसरी ओर से जाना चाहता है)

चमेली—राह में कोई कँटीला झाड़ भी नहीं है, जो उसमें कपड़ा उलझ जाय। तो भी एक बहाना ठहरने के लिये हो जाता!

किशोर—राह में कोई बैल भी नहीं है, जो पीछा करता। तब भी भागकर चमेली के ऊपर गिर पड़ने का एक बहाना मिल जाता।

चमेली—(स्वगत) जान पड़ता है, मेरी बातें सुन लीं। (प्रकट) वाह! यहाँ ख़ूब हवा आ रही है, ज़रा टहलकर हवा खा लेना चाहिए।

किशोर—यहाँ बेशक ख़ूब अच्छी हवा है। सिर में दर्द भी हो रहा है। ज़रा सिर ठंडा कर लूँ।

चमेली—क्या आपने मुझे पुकारा है?

किशोर—आपने क्या मुझसे कुछ कहा है?

चमेली—यही बात थी, तो पहले ही कह देना चाहिए था।

किशोर—बेशक, इतना समय व्यर्थ ही गया।

चमेली—ओ किशोर! किशोर! किशोर!

किशोर—ओ चमेली ! चमेली ! चमेली !

चमेली—मैं तो राजी हूँ !

किशोर—मैं कब नाराज हूँ !

चमेली—ओः !

किशोर—आः ! (दोनों गले लग जाते हैं)

तीसरा दृश्य

स्थान—भगवती का बैठकखाना।

(अँगरेज़ी पोशाक पहने भगवतीप्रसाद, श्यामलाल, भगवानदास, मोहनलाल और गंगाधर)

मोहन०—क्यों जी भगवती, रानी सचमुच मर गई ?

भगवती०—जहाँ तक संभव है।

भगवान०—मरने में जहाँ तक संभव क्या ?

भगवती०—ओ ? तो जान पड़ता है, तुमने Huxley's Synthesis of Horse radish नहीं पढ़ा ? मरना दो तरह का होता है।

भगवान०—किस-किस तरह का ?

भगवती०—यही, एक तो मर्द का मरना—वह मर गया, तो ब्रह्मा के बाप की ताक़त नहीं, जो उसे जिला सके। और, दूसरा औरतों का मरना है—वे बात-बात में कहती हैं—'मरो', 'मरती हूँ', 'मर जाऊँ, तो जान बचे' इत्यादि। इस मरने का कोई विशेष अर्थ नहीं।

गंगाधर—तो रानी सचमुच नहीं मरी ?

भगवती०—मैंने तो देखा था, दाँत-वाँत बैठ गए थे; फिर न मरी हो, तो यह उसी का दोष है। मैं क्या करूँ ?

भगवान०—तब तो तुम अच्छे डॉक्टर हो जी। आदमी मर गया या जिंदा है, सो भी तुम ठीक-ठीक नहीं बता सकते।

भगवती०—भैया, अब चालाकी की जरूरत नहीं है। सौ रुपए देकर अमेरिका से M. D. का टाइटिल मँगा लिया है। अभी तक लोग मुझे कुछ समझते ही न थे। अब आदमी को मार डालूँगा और मुँह में थप्पड़ मारकर फ़ीस के रुपए ले लूँगा। कोई कुछ कह नहीं सकता—M. D. हूँ।

मोहन०—ओः ! इसी से आजकल यह फ़ैशन बना रक्खा है।

भगवती०—(गाता है)—

Hily hilv hily ho tara la la la la le
Foldı roldi raldy ra hily hily hily hi.

मोहन०—और देखता हूँ, अँगरेजी गीत भी सीख लिए हैं !

भगवती०—भैया,अब चालाकी कीजरूरत नहीं। M.D. हूँ।

श्याम०—क्यों जी, राजा और ब्याह करने जा रहा है ?

भगवती०—जाता क्या है। गया Going, going, gone.

गंगाधर—आज तो अँगरेजी का फुहारा छूट रहा है।

(गोपाल का प्रवेश)

श्याम०—क्यों जी छोटे राजा ?

गंगाधर—छोटे राजा सलाम ।

(दोनो पैरों से सलाम करता है)

भगवान०—छोटी रानी के आने में कितनी देर है ?

मोहन०—क्यों यार ! क्या खबर है ? मुँह कुछ उदास देख पड़ रहा है । अभी क्या सोकर उठे हो या नशे की ख़ुमारी है ?

गोपाल—जाओ, तुम लोगों से दोस्ती आज से ख़त्म !

(दूर जाकर बैठता है)

श्याम०—क्यों जी, दोस्ती क्यों ख़त्म ?

भगवान०—अजी, इतने फ़ासले पर क्यों बैठे हो ?

गंगाधर—अरे, बात क्या है ?

मोहन०—लो, चुरुट पियो ।

गोपाल—जाओ, मैं तुम लोगों के लिये इतना करता हूँ, लेकिन मुझे जरूरत पड़ने पर तुम लोगों से कुछ मदद नहीं मिलती ।

श्याम०—अरे भाई, मामला क्या है ? ख़ुलासा करके कहो,—पहेली बुझाना छोड़ो ।

गोपाल—बूढ़े राजा की करतूत सुनी है ?

श्याम०—सुनी है ।

मोहन०—लड़कियों का ऐसा क्या काल पड़ा है, जो तुम्हारे बाप तुम्हें बेदख़ल किए देते हैं ।

गोपाल—बूढ़ा कहता है कि उसे जल्दी से एक ब्याह करने

की बड़ी जरूरत है। उसके चार ब्याह हो चुके हैं, और मेरा एक ब्याह भी नहीं हुआ।

(रोना चाहता है)

गंगाधर—हाय-हाय, कैसा अंधेर है!

श्याम०—ब्याह करने के लिये क्या गए?

गोपाल—(रोकर) हाँ।

भगवान०—आज तो 'त्र्यहस्पर्श' है, ब्याह होगा कैसे?

गोपाल—पंडित ने घूस खाकर मुहूर्त बता दिया है।

मोहन०—ये कलिकाल के पंडित जो न करें, सो थोड़ा।

गोपाल—इस समय मैं मार-पीट तक करने को तैयार हूँ—अगर तुम लोग मेरी मदद करो।

गंगाधर—अच्छा, तुम कुछ सोच न करो। इस ब्याह को अगर मैं भरभंड न कर दूँ, तो मेरा नाम गंगाधर नहीं। चलो जी, चलो।

भगवान०—क्या करोगे? राजा को चौक पर से उठा लाओगे? या सीता-हरण करोगे?

मोहन०—अच्छी बात है! चलो! मैं यही सोच रहा था कि आज बदली का दिन है, बैठे-बैठे क्या किया जाय। यह अच्छा काम मिल गया।

श्याम०—बूढ़े की हवस मिटती ही नहीं। कैसा उल्लू है!—चलो जी, चलो।

मोहन०—साले का ब्याह करना क्या खत्म ही न होगा। यह भी क्या arithmetical progression है। चलो।

(खड़ा हो जाता है)

भगवान०—अरे, उसकी बात क्या कहते हो? वह निरा अहमक़, बेहया, पाजी है! ऐसा न होता, तो लड़के से उसकी जोरू छीन लेने की कोशिश करता? चलो।

(खड़ा हो जाता है)

गंगाधर—इसी का नाम है पल्ले सिरे का बेहयापन! चलो।

(खड़ा हो जाता है)

भगवती०—ना दादा।—(गाता है)

यही तो है देखो जी प्रेम।
जब न रहे future की चिंता, रहे न बिलकुल shame. यही० ॥
past all surgery होय जब Past all हो hope ;
उसके बिना लगे जब जीवन मनो दैव का कोप ॥ यही० ॥
हो वह हब्शी या जापानी चीनी हो या मेम ;
blind-deaf या dumb-blind या hunch-back या lame. यही० ॥
जीवन-चित्र मनोहर का है love ही सुंदर frame ;
उसके बिना नहीं हो सकता कुछ भी कुशल-क्षेम ॥ यही० ॥

(पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

स्थान—विवाह-मंडप

(चारो ओर औरतें हैं। बीच में राजा है)

पहली औरत—मैया रे ! यह बूढ़ा वर !

दूसरी औरत—मैया रे ! तीन पन बीत गए, फिर भी ब्याह की साध नहीं गई !

तीसरी औरत—वर है कि लड़की का बाबा है !

चौथी औरत—ऐसे बूढ़े को भी कोई लड़की देता है ?

पहली औरत—अरे, ये लोग चंडाल हैं ! रुपए के लोभ से लड़की बेचते हैं ।

तीसरी औरत—किसने रुपए लिए हैं ?

दूसरी औरत—कौन जाने बहन ।

पहली औरत—लड़की कहाँ है ? कुल की रीति होनी चाहिए ।

चौथी औरत—हाँ जी । हमें क्या करना है । हम पड़ोसिनें हैं । जिसकी लड़की है, उसी ने नहीं खयाल किया ।

दूसरी औरत—वर के सिर पर यह रावन का ग्यारहवाँ सिर है क्या ?

पाँचवीं औरत—अरे भाई, वर को चौक पर ले चलो—वह स्वाँग की तरह कब तक खड़ा रहेगा ?

तीसरी औरत—वाह-वाह ! वर का आधा मुँह चूने से और आधा कोयले से किसने रँग दिया है ?

पहली औरत– बीच-बीच में सेंदुर की टिपकियाँ भी लगी हैं। यह सचमुच स्वाँग बनकर आया है।

छठी औरत—सुकुमारी के भाग्य में क्या यही बूढ़ा वर बदा था !

चौथी औरत—अजी, तुम लोग जरा चुप रहो। अरे, ओ बिंदो की मा, लड़की कहाँ है ?

(लड़की का बाप लड़की लेकर आता है)

तीसरी औरत—वह लो, लड़की आ गई।

पहली औरत—पुरोहितजी, काम शुरू करो।

चौथी औरत—यही राजा का पुरोहित है ? यह तो मंत्र क्या पढ़ता है, जैसे चिल्ला-चिल्लाकर दोहाई दे रहा है।

पहली औरत—अरे, बाहर बाजे बजाने के लिये तो कहो।

(पुरोहित ब्याह का काम शुरू करते हैं। औरतें गाती हैं। बाहर बाजे बजते हैं। इसी बीच में अपने मित्रों के साथ गोपालसिंह का प्रवेश)

गोपाल—बाबूजी, यह क्या ?

राजा—(घबराकर) क्यों बेटा !

गोपाल—चौक पर से उठिए ; इस लड़की से मेरा ब्याह होगा।

राजा—आः, परेशान क्यों करते हो भैया।

गोपाल—बस, कहता हूँ, उठ आइए।

राजा—अरे बेटा, मैं कल ही तुमको और लड़की खोज दूँगा।

श्याम०—(गोपाल से) अरे, यह खूसट क्या सहज में उठेगा ?

भगवान०—बूढ़े के शर्म तो है ही नहीं।

राजा—आः, मेरा ब्याह हो जाने दो, फिर जो करना हो, सो करो।

श्याम०—(गोपाल से) कहो, तो हाथ पकड़कर घसीट लें ?

भगवान—हाँ-हाँ, घसीट लो ! अजी मोहन, तुम्हारे हाथ-पैरों में तो जोर भी खूब है !

गंगाधर—हाँ जी, सीता-हरण करो।

राजा—अरे भाई, जरा ठहर जाओ।

(सब मिलकर हाथ पकड़कर राजा को बाहर उठा ले जाते हैं। गोपालसिंह जाकर वर के आसन पर बैठ जाता है)

पहली औरत—मैया रे मैया, यह क्या है जी ?

दूसरी औरत—ऐसा तो कभी नहीं देखा !

तीसरी—यह तो दक्ष-यज्ञ विध्वंस है !

पाँचवीं औरत—अब और क्या होगा ! इसी लड़के के साथ ब्याह कर दो।

चौथी औरत—इसी लड़के के साथ तो ब्याह की बातचीत पक्की हुई थी।

छठी औरत—अरे, गड़बड़ क्यों करती हो। यह वर तो उस बूढ़े से अच्छा है।

(पुरोहित फिर मंत्र पढ़ना शुरू करता है। फिर बाजे बजते हैं। औरतें गाती हैं। इसी बीच में राजा के मुसाहब आकर गोपालसिंह को आसन पर से उठा ले जाते हैं)

पहली औरत—मैया रे, अब फिर यह क्या हुआ ?

दूसरी औरत—इस लड़की का ब्याह ही न होगा।

तीसरी औरत—यही तो देख पड़ता है। फिर क्या होगा ?

पाँचवीं औरत—होगा क्या ?

चौथी औरत—पुरोहितजी, बेकार मंत्र क्यों पढ़ रहे हो ?

पुरोहित—(पीनक से चौंककर) हाँ, लड़का कहाँ है ?

लड़की का बाप—मैं क्या जानूँ।

पुरोहित—ब्याह की लग्न बीती जाती है।

लड़की का बाप—फिर मैं क्या करूँ ?

पुरोहित—लग्न बीत जायगी, तो फिर इस लड़की का ब्याह न हो सकेगा।

लड़की का बाप—तो फिर क्या किया जाय ?

(किशोर का प्रवेश)

किशोर—अरे, यह शोर-गुल काहे का है ?

पहली औरत—यह कौन है ?

दूसरी औरत—यह राजा का पोता है।

तीसरी औरत—इसका ब्याह हो गया ?

चौथी औरत—ना, इसका ब्याह नहीं हुआ।

पहली औरत—(लड़की के बाप से) तो फिर इसी के साथ न कर दो।

लड़की का बाप—(किशोर से) भैया, तुम अगर अनुग्रह करके मेरी लड़की से ब्याह कर लो—

किशोर—क्यों, राजा कहाँ है ?

लड़की का बाप—कुछ शराबी आकर उन्हें उठा ले गए।

पहली औरत—भैया, तुम इस लड़की से ब्याह कर लो।

किशोर—यह भी कहीं हो सकता है ?

तीसरी औरत—हो क्यों नहीं सकता भैया।

किशोर—नहीं जो नहीं, मैं इस लड़की से कैसे ब्याह कर लूँ ?

तीसरी औरत—भैया, यह लड़की तुम्हारे ही लायक़ है।

चौथी औरत—लड़का कैसा सुंदर है !

दूसरी औरत—बेशक, क्या अच्छी जोड़ी है।

चौथी औरत—भैया, तुमको यह ब्याह करना ही पड़ेगा।

किशोर—इस तरह जल्दी से कहीं ब्याह किया जाता है ?

पाँचवीं औरत—किया क्यों नहीं जाता। पुरोहितजी ! मंत्र पढ़ो।

(पुरोहित फिर मंत्र पढ़ता है। औरतें गाती हैं। बाजे बजते हैं)

पहली औरत—(लड़की के बाप से) कन्या-दान करो।

किशोर—यह क्या, ज़बरदस्ती पकड़कर ?

लड़की का बाप—भैया !

(हाथ जोड़ता है)

किशोर—अरे, ज़रा मेरी बात तो सुनो।

लड़की का बाप—अब कुछ न कहो-सुनो।

किशोर—मगर—

पुरोहित—(लड़की के बाप से) जल्द कन्या-दान करो।

(किशोर भागना चाहता है। औरतें उसे पकड़ लेती हैं। पुरोहित कन्या-दान का संकल्प पढ़ता है)

किशोर—यह तो कन्या-दान नहीं, ज़बरदस्ती है।

लड़की का बाप—(हाथ जोड़कर) भैया!—

पुरोहित—(संकल्प कर) जल्द कन्या-दान करो।

लड़की का बाप—मुझे क्या कहना होगा?

पुरोहित—कहो, मैं कन्या देता हूँ।

लड़की का बाप—मैं कन्या देता हूँ।

पुरोहित—चलो, बस ब्याह हो गया।

किशोर—ज़बरदस्ती से। (राजा का प्रवेश)

राजा—लो, मैं आ गया। (गोपाल का प्रवेश)

गोपाल—और मैं भी आ गया।

किशोर—अब झगड़ा करना बेकार है। लड़की का ब्याह तो हो गया।

राजा और गोपाल—(आँखें फाड़कर) ऐं! हो गया!! किसके साथ!!!

किशोर—मेरे साथ।

गोपाल—क्यों रे पाजी लड़के!

किशोर—मैं क्या करूँ चाचा ? इन लोगों ने ज़बरदस्ती मुझे पकड़कर मेरा साथ ब्याह कर दिया।

(व्यस्त भाव से चमेली का प्रवेश)

गोपाल—कौन है ? ऊपर गिरा पड़ता है ?

किशोर—हाँ, अब यह आप ही के गले पड़ेगी।

गोपाल—कैसे ?

किशोर—आप अब इन्हीं के साथ ब्याह करिएगा। आपको अधिक कुछ न करना पड़ेगा। मैंने कोर्टशिप-ओर्टशिप सब ठीक कर रक्खी है। उसके लिये आपको कुछ कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। सिर्फ़ ब्याह करना बाक़ी है।

गोपाल—क्या इससे ?

किशोर—इससे नहीं, तो और किससे ?

गोपाल—(सिर खुजाते हुए) लाचारी है !

राजा—और मैं ? मैं क्या यों ही रह जाऊँगा ?

किशोर—आपके लिये क्या चिंता है दादा। इस लड़की से जैसे मैंने ब्याह किया, वैसे आपने। बात एक ही है। रहेगी तो आप ही के घर में।

(रानी का प्रवेश)

रानी—राजा !

राजा—(काँपकर) रानी ! तुम हो ?

रानी—हाँ; मैं नहीं हूँ, तो और कौन है ?

राजा—तुम मरी नहीं ?

रानी—हम लोगों की जान मछली की जान है। मरकर भी हम नहीं मरतीं।

किशोर—फिर दादाजी, अब आप क्या करेंगे? आपको ब्याह करने का शौक़ हुआ? न हो, इन रानी से ही फिर ब्याह कर लो!

राजा—(सिर खुजाते हुए) लाचारी है!

(भगवती का प्रवेश)

राजा—क्यों डॉक्टर, रानी तो मरी नहीं?

भगवती०—ज़रूर मर गई हैं।

रानी—मर कैसे गई हूँ? मैं तो सदेह सबके सामने खड़ी हूँ।

भगवती०—मैं नाड़ी देख चुका हूँ, आप मर गई थीं। अब आपके कहने ही से कैसे मान लूँ कि आप नहीं मरीं?

किशोर, गोपाल और राजा—ज़रूर मरी हैं।

(भगवती को मारते हैं)

भगवती०—अरे भाई, रानी नहीं मरी, तो न सही। मैं क्या करूँ, जो रानी नहीं मरीं? बाप रे! एकदम तीन पुश्त मिलकर मार रहे हैं! छोड़ दो—छोड़ दो। ओह—बाप रे! मर गया!

राजा—जाने दो—सब भरभंड हो गया!

भगवती०—मैं तो जानता था कि बाप-बेटा-पोता तीनों मिलकर 'व्यहस्पर्श' जुट गया है, सब कुछ गड़बड़झाला हुए बिना नहीं रह सकता।

रानी—हाय, प्रेम का क्या यही अंजाम है?

भगवती०—हाँ, प्रेम एक विचित्र बीमारी है! विचित्र है! ब्याह होने के दो-तीन साल बाद ही अच्छी हो जाती है। Ruskin की Pathology में लिखा है कि—

राजा—जाओ, अपना बेहूदापन रहने दो।

(सब मिलकर गाते हैं)

बड़े मज़े का प्रेम-तमाशा, प्रेमी भी है चीज़ बड़ी;
अरे प्रेम की अद्भुत लीला, जादू की है यही छड़ी।
प्रथम मिलन के चुंबन में सब जीते ही मर जाते हैं;
और गले लगाते ही जैसे स्वर्ग हाथ में पाते हैं।
पहले तो इस प्रेम-नशे में तुच्छ जगत सब लगता है;
रात-रात-भर पड़ा पलँग पर प्यारा प्रेमी जगता है।
प्रथम विरह में "हाय-हाय, मैं मरा, आह, ऊः" होता है;
प्रभु, प्राणेश्वर, प्रिये, प्रियतमे कहकर विरही रोता है।
किंतु अंत को फीका पड़ता रंग प्रेम का दें-दें-फिश;
सच सब खेल प्रेम का प्यारो, हो जाता है आप फ़िनिश।

(परदा गिरता है)
